सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अक्तूबर, 2020 वर्ष 19 अंक 08

नबी पर दुरूद और लाखों सलाम

ख़ुदा की महब्बत हो दिल में मकीं
सिवा उसके माबूद कोई नहीं
नबी की महब्बत को लाज़िम करें
नबी की इताअ़त को लाज़िम करें
मुतीअ़े नबी है मुतीअ़े ख़ुदा
है कुर्आन में यह लिखा बरमला
नबी पर दुरूद और लाखों सलाम
हों आले नबी पर भी या रब सलाम
उनके असहाब व अज़वाज पर भी सलाम
रहे उन पे रहमत ख़ुदा की मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzaman-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलै0	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	13
ख़िलाफ़ते राशिदा	मौलाना गुलाम रसूल मेहर	16
कोरोना ने दीनी मकातिब को	इदारा	19
बेजान अपीलों में कोई ताक़त	मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी	20
नअ़त	शौकत नियाज़ी	21
प्रचार एवं प्रसार के साधन	हज़रत मौ0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
कोरोना और दीनी तालीमात	अबू अहमद नदवी काँधलवी	27
दुन्या की तैयारी	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	32
हलाल कमाई का महत्व और	मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी	34
तुलसी (रैहान)	फौज़िया सिद्दीक़ा बी0ए0	36
दोहरा इनाम	राशिदा नूरी	38
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	32
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

और हम उनको वह किताब दे चुके जिसको हम इल्म के साथ खोल चुके हैं[(1)] जो ईमान वाले लोगों के लिए हिदायत व रहमत है (52) क्या वे लोग उसके परिणाम की प्रतीक्षा में है, जिस दिन उसका परिणाम सामने आ जाएगा तो जो लोग उसको पहले भुला चुके वे कहेंगे कि हमारे पालनहार के पैग़म्बर सच्चाई के साथ आ चुके, तो अब है कोई सिफारशी जो हमारी सिफारिश कर दे या हम दुबारा भेज दिए जाएं तो जो काम हम किया करते थे उसको छोड़ कर दूसरे काम करें, खुद उन्होंने अपना ही नुकसान किया और वे जो भी गढ़ा करते थे वह सब हवा हो गया[(2)] (53) तुम्हारा पालनहार तो वही अल्लाह है जिसने छः दिनों में आसमान और ज़मीन पैदा किए फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, वह रात को दिन से ढांप देता है उसके पीछे वह लगा ही रहता है और सूरज और चाँद और तारे सब उसके आदेश से काम पर लगे हुए हैं[(3)] सुन लो उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है हुक्म चलाना, बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो संसारों का पालनहार है[(4)] (54) अपने पालनहार को गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके पुकारो वह हद से गुज़रने वालों को पसंद ही नहीं करता(55) और ज़मीन में उसकी सुधार के बाद बिगाड़ मत करो और उसी को डर और आशा के साथ पुकारते रहो, बेशक अल्लाह की रहमत बेहतर काम करने वालों से करीब ही है(56) वही है जो शुभ समाचार के रूप में अपनी रहमत से हवाएं चलाता है, यहां तक कि जब वह हवाएं भारी भारी बादल उठा लाती है तो हम उनको किसी मुर्दा बस्ती की ओर फेर देते हैं फिर उससे पानी उतार देते हैं फिर उससे हर प्रकार के फल निकालते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को भी निकाल खड़ा करेंगे शायद तुम इस पर ध्यान दो(57) और जो ज़मीन अच्छी होती है उसकी पैदावार तो अपने पालनहार के आदेश से निकल आती है और जो ज़मीन ख़राब हो गई हो उससे खराब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता, इसी प्रकार हम निशानियाँ फेर फेर कर उन लोगों को बताते हैं जो शुक्र करने वाले होते हैं[(5)] (58) हम ही ने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम। अल्लाह की बन्दगी करो उसके अलावा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है(59) क़ौम के सम्मानित लोग बोले तुम तो हमें साफ़ बहके हुए दिखाई पड़ते हो(60) उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं कुछ भी बहका नहीं हूँ लेकिन मैं तो तमाम संसारों के पालनहार का

भेजा हुआ हूँ(61) अपने पालनहार के संदेश तुम को पहुँचाता हूँ और तुम्हारी भलाई चाहता हूँ और अल्लाह की ओर से वह चीज़ मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते(62) क्या तुम्हें केवल इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का उपदेश तुम ही में से एक व्यक्ति के द्वारा पहुँचा ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ और ताकि तुम पर रहमत हो(63) बस उन्होंने उनको झुठला दिया तो हमने उनको और उनके साथ नाव वालों को बचा लिया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया उनको डुबो दिया वे थे ही अंधे लोग(64) और आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की बन्दगी करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, क्या फिर भी तुम नहीं डरोगे?(56) उनकी क़ौम के सम्मानित लोग जो इनकार कर चुके थे बोले तुम तो हमें मूर्ख दिखाई पड़ते होऔर हम तो तुम्हें झूठा ही समझते हैं(66) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मुझमें कुछ भी मूर्खता नहीं लेकिन मैं तो संसारों के पालनहार का भेजा हुआ हूँ(67)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी हमने अपने ज्ञान के आधार पर उसमें तमाम विवरण बयान कर दिये हैं।

2. यह दुन्या परीक्षा स्थल है जो करना है वह बता दिया गया उसका परिणाम कर्म के अनुसार सामने आएगा, परिणाम सामने आने के बाद फिर उसी के अनुसार मामला होगा तो अगर कोई परिणाम के इंतेजार में रहा और हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा या गलत काम करता रहा तो उसने अपना नुकसान किया अब उसको कुछ मिलना नहीं न उसका कोई सिफारिशी होगा।

3. सारी चीज़ें अल्लाह ने एक क्रम के साथ युक्ति व नीति के साथ बनाईं वह चाहता तो एक शब्द ''कुन'' (हो जा) से सबको वजूद में ले आता लेकिन जिस तरह दुन्या में लोग एक के बाद एक पैदा हो रहे हैं और व्यवस्था चल रही है उसी तरह यह आसमान व ज़मीन भी क्रमानुसार पैदा किए गए फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ, कैसे हुआ यह कोई नहीं जान सकता, उसके जैसा कोई नहीं हो सकता वह सुनता है, देखता है, लेकिन हमारी तरह नहीं, इसी तरह वह विराजमान हुआ लेकिन किस तरह यह वही जानता है।

4. दुन्या पैदा कर के उसका अधिकार समाप्त नहीं हुआ सब कुछ उसी के कब्ज़े में है किसी को उसमें हस्तक्षेप का अधिकार नहीं।

5. पहले उदाहरण दिया कि जिस प्रकार बंजर जमीन में वर्षा करके अल्लाह कैसे पौधे उगा देता है उसी तरह लोग मरने के बाद उठाए जाएंगे अब यहां एक और उदाहरण दिया जा रहा है कि अल्लाह की हिदायत जो उसके पैग़म्बर लेकर आते हैं वर्षा की तरह है जिस प्रकार अच्छी ज़मीनें उससे खूब फायदा उठाती हैं और बंजर ज़मीनों में उनसे कम फायदा होता है इसी तरह इस खुदाई हिदायत से लोग अपने अपने साहस के अनुसार ही फायदा उठाते हैं, फिर उसके बाद पैग़म्बरों का वर्णन शुरु हो रहा है हज़रत आदम का उल्लेख अभी निकट में ही गुज़रा है उनके बाद हज़रत नूह साहसी पैग़म्बरों में गुज़रे हैं इस पावन वर्णन की शुरुआत उन्हीं से की जा रही है, हज़रत आदम के बाद लंबे ज़माने तक लोग

शेष पृष्ठ .....24....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

क़यामत से पहलेः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत में दज्जाल निकलेगा और चालीस ..... ठहरेगा (रावी कहते हैं कि) मैं नहीं जानता कि हुजूर सल्ल0 की मुराद चालीस से चालीस दिन थे या चालीस महीने या चालीस साल। फिर अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलै0 को भेजे गा वह दज्जाल को तलाश करके मार डालेंगे, फिर सात साल ठहरेंगे, वह वक्त ऐसा होगा कि दो लोगों में किसी तरह की दुश्मनी न होगी फिर अल्लाह तआला मुल्के शाम की तरफ से एक ठंड़ी हवा चलायेगा जिसकी तासीर यह होगी कि जिस के दिल में जर्रा भर ईमान होगा उसकी रूह क़ब्ज़ हो जायेगी। यहां तक की अगर तुम में से कोई पहाड़ के ग़ार में भी छुपेगा तो वह वहां भी पहुंच कर उसकी जान ले लेगी। उसके बाद तो बदतरीन लोग रह जायेंगे जिन में परिन्दों की तरह तेज़ी और फाड़ने वाले दरिंदों की सी बेअक़ली होगी न किसी नेकी को समझेंगे न बदी से परहेज करेंगे। उस वक़्त शैतान किसी सूरत में उनके पास आयेगा और उनसे कहेगा तुम लोग मेरा कहा क्यों नहीं मानते, वह कहेंगे तुम्हारा क्या हुक्म है। तब वह उनको बुत पूजने का हुक्म देगा, उस वक्त उनके रिज़्क में बढ़ोत्तरी कर दी जायेगी और ज़िन्दगी खूब मज़े से गुजरेगी, उसी अर्से में सूर का बिगुल बजेगा, जिस से हर सुनने वाले की गर्दन एक ओर झुकेगी और दूसरी तरफ से उठ जायेगी। सबसे पहले सूर की आवाज़ वह सुनेगा जो अपने ऊँट के हौज़ को लीपता और ठीक कर रहा होगा, तो वह आवाज़ सुनते ही मर जायेगा, इस तरह सारे लोग अपने कारोबार की व्यस्तता की हालत में खत्म हो जायेंगे, फिर अल्लाह तआ़ला ओस की तरह हल्का फुल्का पानी बरसायेगा जिस से सड़े गले जिस्म तरो ताज़ा हो जायेंगे फिर दूसरी बार सूर फूंका जायेगा तो वह सब ज़िन्दा हो कर कयामत का हवलनाक मंज़र देखेंगे, फिर कहा जायेगा, ऐ लोगो! अपने रब के हुजूर में चलो, फिर फरिश्तों को हुक्म होगा कि इन को ठहराओ आज इनसे सवालात होंगे, फिर हुक्म होगा कि इनमें से दोज़ख़ियों को अलग कर दो, फरिश्ते अर्ज करेंगे कितनों में से कितने, इरशाद होगा, हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे, यह दिन ऐसा होगा कि बच्चों को बूढ़ा कर देगा और यह दिन ऐसा है कि पिंडली खोल दी जायेंगी। (मुस्लिम)

मदीना दज्जाल से महफूज़ रहेगाः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया दज्जाल से कोई शहर महफूज़ न रहेगा।

शेष पृष्ठ .....35....पर

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्म का शुभ वर्णन

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अब से पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व जज़ीरतुल—अरब (जो अब सऊदी अरब कहलाता है) और जिसे हम आगे केवल अरब देश लिखेंगे। मक्का नगर में एक बड़ा प्रतिष्ठित गोत्र (कुरैश) रहता था जिसके उस समय के मुखिया अब्दुल मुत्तलिब थे, मक्का नगर में और भी कई सम्मानित तथा समृद्धि गोत्र रहते थे हर गोत्र का एक मुखिया होता था तमाम गोत्रों के मुखिया अब्दुल मुत्तलिब का बड़ा सम्मान करते थे जिसका कारण ये था कि मक्के में जो अल्लाह का घर काबा था अब्दुल मुत्तलिब उसके संरक्षक (मुतवल्ली) थे।

काबे का निर्माणः—

काबा वास्तव में इस धरती पर अल्लाह की इबादत का पहला घर था, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत से दुन्या में उतारे गये तो उनकी पत्नी हज़रत हव्वा भी उतारी गयीं तो ये लोग काबे में अल्लाह की प्रार्थना करते थे। पवित्र कुर्आन में आया है कि काबा अल्लाह की प्रार्थना के लिए इस धरती पर मक्का नगर में बनाया गया। हज़रत आदम अलै0 की सन्तान बढ़ती गयी बढ़ती गयी। अल्लाह ने आदम की सन्तान को सत्य मार्ग दिखाने के लिए पैगम्बरों की श्रृंखला चलाई हज़रत आदम पहले पैगम्बर थे उनके बाद न जाने कितने पैगम्बर आये हज़रत नूह अलै0 के समय में बहुत बड़ी बाढ़ आई हज़रत नूह अलै0 ने एक बड़ी कशती बनाई उस कशती में जो लोग सवार थे उनके अलावा सब डूब गये न मक्का रहा न काबा जब पानी की बाढ़ ख़त्म हुई तो जहां मक्का था वहां सूखी काली पहाड़ियां हो गयीं समय बीतता रहा पैगम्बर आते रहे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आये उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलै0 आये और उन्होंने अल्लाह के हुक्म से जहां मक्का था वहां अल्लाह का घर काबा बनाया और वह नगर मक्का कहलाया लोग काबे का हज करते वहां अल्लाह की इबादत करते काबा अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया था समय बीतता गया हज़ारों साल बीत गये अरब देश में कोई नबी न आया शैतान ने अरब वासियों को खूब बहकाया वह इब्राहीम अलै0 की शिक्षायें भूल गये मनमाने तौर पर नंगे हो कर हज करने लगे हर गोत्र में अपना एक बुत मूर्ति काबे में रख दिया देखते ही देखते काबे में तीन सौ सात बुत हो गये उसी काबे के अब्दुल मुत्तलितब को अल्लाह ने 12 बेटे दिये थे उनमें से एक का नाम अब्दुल्लाह था अब्दुल्लाह की शादी बीबी आमिना से हुई कुछ ही दिनों में उनको गर्भ हो गया लेकिन बड़े खेद की बात है कुछ दिनों बाद अब्दुल्लाह

का देहान्त हो गया अब्दुल मुत्तलिब को बड़ा दुख हुआ। बीबी आमिना को उनसे अधिक दुख हुआ परन्तु बीबी आमिना को उनके गर्भ से उनको शान्ति मिलती रही।

हाथी वालों की घटनाः–

अरब देश से मिला हुआ यमन देश है, उस समय यमन पर हब्शा के बादशाह का अधिकार था। उसकी ओर से यमन में अबरहा गवर्नर था, अबरहा को अरब वासियों का काबे से प्रेम अच्छा न लगता था। वह चाहता था कि अरब के लोग हमारी तरफ़ आकर्षित हों इसके लिए उसने यमन में एक सुन्दर तथा भव्य गिरजाघर बनाया और समझा कि अरब लोग उसके दर्शन को आया करेंगे लेकिन अरब लोग उसे दर्शन को न गये अपितु एक अरबी ने उसका अपमान कर दिया। इस पर अबरहा को बड़ा क्रोध आया उसने हाथियों की एक सेना लेकर काबे को ढा देने के लिए मक्के की तरफ चल पड़ा परन्तु मक्का पहुंचने से पहले अल्लाह ने उस पर चिड़ियों का एक झुण्ड भेजा उनकी चोंचों में एक कंकरी थी चिड़ियों ने हाथियों की सेना पर कंकरी गिराना आरम्भ कर दिया। वह कंकरी जिस सैनिक या हाथी पर गिरती हलाक कर देती, इस तरह पूरी सेना नष्ट हो गयी और काबा सुरक्षित रहा।

इस घटना के पचास दिन बाद हज़रत आमिना ने एक बच्चे को जन्म दिया हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को बड़ी प्रशंसा हुई वह आये और पोते को गोद में ले कर काबे में दाखिल हुये फिर वापस हो कर बच्चा माँ को दे दिया और उसका नाम मुहम्मद रखा।

आश्चर्यजनक परम्पराः–

मक्का नगर में यह परम्परा थी कि जिसके यहाँ बच्चा पैदा होता माँ दो चार दिन दूध पिला कर देहात के किसी औरत को दूध पिलाने के लिए दे देती वह औरत बच्चे को दूध पिलाने के लिए देहात ले जाती। जब दूध छूटता वापस ला कर माँ को दे देती और इनाम व इकराम लेती इसी परम्परा के अन्तर्गत पहले हज़रत आमिना ने दूध पिलाया फिर कुछ और औरतों ने भी दूध पिलाया उसके पश्चात देहात से दाई हलीमा आयीं और आमिना के लाल को दूध पिलाने के लिए ले गयीं दाई हलीमा ने बच्चे की बड़ी बरकतें देखीं, स्वयं उनकी छातियों में दूध बहुत बढ़ गया, उनकी बकरियाँ मोटी हो कर खूब दूध देने लगीं हज़रत आमिना की अनुमति से दूध छूटने के बाद भी बच्चा दाई हलीमा के घर रहा, फिर वह बच्चे को वापस कर गयीं। अब आमिना का लाल दादा अब्दुल मुत्तलिब के संरक्षण और आमिना की गोद में पलता रहा परन्तु बड़े खेद की बात है जब बच्चा छह साल का हुआ तो हज़रत आमिना का देहान्त हो गया, अब दादा की देख भाल में बच्चा पलता रहा। (अब हम आमिना के लाल के बजाये आप लिखेंगे)।

जब आप आठ बरस

के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब का भी देहान्त हो गया, अब चचा अबू तालिब के संरक्षण में रहने लगे।

जब आप जवान हो गये तो उजरत पर लोगों की बकरियाँ भी चराईं, व्यापार भी किया, जब आप पच्चीस वर्ष के हो गये तो मक्के की एक रूपवती स्त्री ख़दीजा से विवाह कर लिया यद्यपि खदीजा विधवा थीं और चालीस वर्षों की थीं परन्तु हमारे हुजूर सल्ल0 ने उनके साथ विवाह करके गृहस्थ जीवन बिताने लगे। अल्लाह ने सन्तान देना आरम्भ किया, हज़रत ख़दीजा से चार बेटियाँ हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुकैय्या, हज़रत उम्मे कुल्सुम और हज़रत फ़ातिमा प्रदान कीं और तीन बेटे हज़रत क़ासिम, हज़रत ताहिर, और हज़रत तय्यिब प्रदान कीं, परन्तु यह तीनों बेटे बचपन ही में मृत्यु को प्राप्त हो गये।

जब आप चालीस वर्षों के क़रीब हुए तो एकान्त में रहना पसन्द करने लगे, मक्के से बाहर ''हिरा'' नाम की एक गुफा थी वह वहां चले जाते और एकान्त में खुदा की याद में बड़ा समय बिताते, वहीं एक दिन हज़रत जिबरील अलै0 आ गये और पवित्र कुर्आन की पाँच आयतें पढ़ाईं जिनका अर्थ यह है:—

1. अपने रब के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया।
2. जिसने इंसान को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
3. पढ़ तेरा रब बड़ा करीम है।
4. जिसने कलम द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था।

यह पहली ''वही'' थी परन्तु इससे आप घबरा गये और आ कर हज़रत खदीजा को बताया और कहा मुझे अपने प्राणों की आशंका लग रही है। हज़रत खदीजा ने तसल्ली दी और कहा भय की बात नहीं, अल्लाह आप को सुरक्षित रखेगा। कुछ दिन रुकने के बाद फिर ''वही'' नाज़िल हुई और आप को दूसरों तक इस्लाम पहुंचाने का आदेश हो गया आपने लोगों से कहा, लोगो! मान लो अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य नहीं है केवल वही पूज्य है, जब यह मान लोगे तो सफलता प्राप्त कर लोगे। और कहा, मैं अल्लाह का नबी हूं तुम लोगों तक इस्लाम पहुंचाने के लिए भेजा गया हूं, मक्के वाले तो अनेकेश्वरवादी थे, एकेश्वर वाद के आवाहन सुन कर आपके विरोधी हो गये जब कि मक्के वाले अब तक आपको सादिक़ और अमीन समझते और कहते थे फिर भी जो भली रूहें थीं आप पर ईमान लाने लगीं। आपके मित्र अबू बक्र ईमान लाये, आपकी पत्नी हज़रत ख़दीजा ईमान लाईं, आपके चचाज़ाद भाई हज़रत अ़ली ईमान लाये यद्यपि वह अभी बच्चे थे, हज़रत ज़ैद ईमान लाये, इस तरह ईमान लाने वालों का एक सिलसिला चल पड़ा परन्तु बड़े खेद की बात है कि मक्के वाले ईमान लाने वालों पर बड़ा अत्याचार करते, हज़रत यासिर उनकी पत्नी सुमय्या, हज़रत बिलाल, हज़रत

ख़्ब्बाब जैसों को जिस तरह दुख पहुंचाया आज भी उसको सुन कर मैं दुखी हो जाता हूँ, मक्के वालों का अत्याचार जारी रहा। कुर्आन उतरता गया ईमान लाने वाले बढ़ते गये। कुछ ईमान वाले तो मक्का छोड़ कर हब्शा चले गये थे, हज का ज़माना आया। मदीने से बहुत से लोग हज़ करने आये, हमारे हुजूर से मिले उनकी शिक्षायें सुनीं और उन पर ईमान ले आये और हुजूर सल्ल0 को मक्का छोड़ कर मदीना आने की दावत दी लेकिन अभी अल्लाह का आदेश न था, आपने हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर को मदीना वालों को इस्लाम सिखाने के लिए मदीना भेज दिया अब मुसलमान मदीना जाने लगे, हमारे हुजूर सल्ल0 अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करते रहे।

नुबूवत के दसवें वर्ष चचा अबू तालिब का देहान्त हो गया यद्यपि वह ईमान न ला सके थे, परन्तु हमारे हुजूर के लिए सुरक्षा का कारण थे वह क़ौम के मुखिया थे उनकी वजह से किसी की मजाल न थी कि हमारे हुजूर सल्ल0 को हानि पहुंचाता, कुछ ही समय पश्चात हज़रत ख़दीजा का देहान्त हो गया इन दों मौतों से हमारे हुजूर बहुत दुखी थे अल्लाह ने आपकी दिल जूई चाही और आपको मेराज पर बुला लिया, एक रात आप बुर्राक़ पर सवार हो कर बैतुल मक़्दिस गये, वहां से सातों आसमानों के ऊपर गये, अल्लाह से बातें कीं, अल्लाह ने आपको जन्नत और जहन्नम का दृश्य दिखाया और पाँच वक़्तों की नमाज़ों का उपहार दे कर वापस किया यह सारा काम रात के एक भाग में हो गया। सुब्ह को आपने लोगों को यह राज़ की बात बताई, ईमान वालों ने मान लिया मगर दूसरों ने खिल्ली उड़ाई।

कुर्आन उतरता गया ईमान लाने वाले बढ़ते गये तो मक्के के मुश्रिकों का विरोध भी बढ़ता गया यहां तक कि लोगों ने आपके क़त्ल का प्लान बना लिया, तो दूसरी ओर हिजरत का आदेश भी आ गया आप अपने यारेग़ार अबू बक्र सिद्दीक़ को साथ ले कर रातों रात मक्के से मदीने के लिए रवाना हो गये, रास्ते के आश्चर्यजनक बातों को छोड़ते हुए हम लिखते हैं कि आप मदीना पहुंच गये मदीने वालों ने आपका भव्य स्वागत किया, आपने वहां पहुंच कर मस्जिद बनाई और इत्मीनान के साथ इस्लाम की शिक्षाएं फैलाने लगे, परन्तु मक्के वाले चुप न बैठे उन्होंने इस्लाम को मिटाने के लिए मदीने पर आक्रमण आरम्भ कर दिया। रमज़ान दो हिज्री को शक्तिशाली आक्रमण किया, बद्र के मैदान में लड़ाई हुई, मक्के वाले पराजित हुए और उनके बड़े बड़े सोरमा मारे गये, लेकिन उन्होंने तीन हिजरी शव्वाल के महीने में फिर आक्रमण किया यह उहुद की लड़ाई कहलाती है, इसमें बाज़ सहाबा से चूक हुई और सत्तर सहाबी शहीद हुए, हुजूर के प्रिय

चचा हज़रत हमज़ा शहीद हुए, स्वयं आप ज़ख़्मी हुए फिर भी सहाबा ने मक्के वालों का पीछा किया और वह सब भाग गये, तीसरा आक्रमण सन् पाँच हिजरी में हुआ, इस बार मक्के वाले दस हज़ार थे उनसे लड़ना सरल न था, सहाबा ने मदीने के एक और ख़ंदक़ खोद ली ताकि उससे कुछ बचाव हो सके, इसी लिए यह लड़ाई ख़न्दक की लड़ाई कही जाती है, इसमें अल्लाह की बड़ी मदद आई, बड़ी सख़्त आंधी आई मक्के वालों को भागना पड़ा इस प्रकार और भी चुटपुट लड़ाईयां हुई। कुर्आन उतरता गया, इस्लाम फैलता गया जो भी इस्लाम लाता मदीने आ जाता आब वह दिन भी आ गया कि सन् आठ हिजरी में हमारे हुजूर ने दस हज़ार सहाबा की फौज़ ले कर मक्के पर चढ़ाई कर दी मक्के वाले मुक़ाबला न कर सके सबने हार मान ली, सबने क्षमा माँगी, सब ईमान ले आये, हमारे हुजूर ने सब का ईमान स्वीकार किया और क्षमा दे कर मदीने वापस आ गये, इस्लाम के आदेश पूरे हो गये। नमाज़, रोज़ा, ज़कात फर्ज़ हो चुके थे, जन्म से ले कर मृत्यु तक के आदेश उतर चुक थे। व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के आदेश पूर्णतः आ चुके थे, सन नौ हिजरी में हज भी फर्ज़ हो गया। यह सब आदेश पवित्र कुर्आन तथा हदीस की किताबों में सुरक्षित हैं। हज़रत अबू बक्र अमीरे हज बना कर भेजे गये और मुसलमानों ने हज का फरीज़ा पहली बार अदा किया, सन् दस हिजरी में हमारे हुजूर सल्ल0 ने सहाबा की बहुत बड़ी तादाद के साथ पहला और आखिरी हज किया जिसको ''हिज्जतुल वदाअ़'' कहते हैं इसी हज़ में अरफात के मैदान में इस्लाम मुकम्मल होने वाली आयत उतरी। हिज्जतुल वदाअ़ का आपका भाषण बहुत प्रसिद्ध है हज के बाद आप मदीना आ गये कुर्आन उतरते हुए 23 वर्ष हो रहे थे आख़िर में सूरः बकरा की आयत नम्बर 281 उतरी। और कुर्आन पूरा हो गया।

सन् 11 हिजरी में अल्लाह तआ़ला ने हमारे हुजूर सल्ल0 को वफात दी यह रबीउल अव्वल की 12 तारीख़ थी और दिन दोशम्बा था। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि़ऊन सल्लल्लाहु तआ़ला अला मुहम्मदिंव व अ़ला आलिहि मुहम्मद व अ़ला अस्हाबिहि व बारक व सल्लम।

यह लेख बहुत संक्षिप्त में लिखा गया है जिसको विस्तार से पढ़ना हो हज़रत मौलाना अली मियां साहब रह0 की किताब ''नबीये रहमत'' पढ़े जो उर्दू में भी है और हिन्दी में भी है।

अल्लाह तआला हम सब को अपनी महब्बत व इताअत की तौफीक़ दे और प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत और इताअ़त की तौफीक़ से नवाज़े।

आमीन।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

नबूवत (दूतकर्म)का असल कारनामा

कुर्आन में आख़िरत का बयान और उसके तर्क :–

मोमिन (आस्थावान) की दुआः–

अनुवादः– *ऐ हमारे रब! तूने जिसे आग (नर्क) में डाला उसे रुसवा किया, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं.....और क़यामत के दिन हमें रुसवा न करना बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता।*
(सूरः आले इमरान 192 व 194)

इसी का कारण है कि आख़िरत के इस नितांत अ़जाब (दण्ड) और हश्र की इस जिल्लत व रुसवाई पर दुन्या की बड़ी बड़ी तकलीफ और बड़ी से बड़ी रुसवाई व बदनामी को वह वरियता देता है, इस भय से न केवल उसको सहन करता है बल्कि कभी तो अपने गुनाह का इज़हार करके उसको खुद मोल लेता है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के समय में एक मुसलमान पुरुष माइज़ और एक मुसलमान औरत गामदियह ने बार–बार अपनी गलती का इज़हार किया और इच्छा की कि उनको दुन्या में सज़ा दे कर आख़िरत के दाग़ से और जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया जाये। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने अनदेखी की लेकिन वे बार–बार सामने आये और उन्होंने इस सज़ा की प्रार्थना की। घटना इस प्रकार हैः–

अब्दुल्लाह पुत्र बुरैदा अपने पिता से सुन कर कहते हैं कि एक दिन माइज़ पुत्र मालिक अस्लमी अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में आये। और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने अपने पर बड़ा अत्याचार कर डाला, अर्थात मुझ से बलात्कार का पाप हो गया है, अतः मुझ पर हद जारी कर के (दण्ड देकर) मुझे पाक कर दिया जाये। आपने उस दिन उनको वापस कर दिया। अगले दिन वह फिर उपस्थित हुए और वही प्रार्थना की। आपने दूसरी बार भी उनको लौटा दिया। और उनके खानदान वालों को बुलवा के पूछा कि तुम्हें कुछ ज्ञात है। यह आदमी गलत तो नहीं कह रहा है। उन्होंने कहा जहां तक हमें मालूम है हम तो इसको समझदारी में अपनी क़ौम के अच्छे लोगों में ही समझते हैं। माइज़ तीसरी बार फिर हाज़िर हुए। आपने उनको उनके क़बीले वालों के पास भेज कर फिर उनके बारे में जानकारी करायी। उन्होंने यही कहा कि हमारे नज़दीक इसके होश व हवास ठीक हैं। फिर जब चौथी बार आये तो उनके लिए एक गड्ढा खुदवाया गया और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के आदेश से उनको पत्थरों से मार डाला गया। फिर औरत आयी और उसने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं बलात्कार की पापिन हूँ। अतः हद (दण्ड) जारी करके मुझे इस गुनाह से पाक करा दीजिए। आपने

उसे वापस कर दिया, अगले दिन वह फिर आई और कहा श्रीमान आपने मुझे क्यों लौटा दिया शायद आपने मुझे (शक संदेह के कारण) उसी प्रकार से वापस किया जैसे माइज़ को वापस किया था। अल्लाह की कसम मैं गर्भवती हूँ। आपने फरमाया जब यह बात है तो इस समय हद नहीं जारी हो सकती। अतः तब आओ जब कि तुम्हारा बच्चा पैदा हो जाये। इस घटना को बयान करने वाले कहा करते हैं कि जब उसके बच्चा हो गया तो एक कपड़े में ले कर आई और कहा, यह बच्चा है जो मुझसे पैदा हो चुका है (अतः मुझ पर हद जारी कर दी जाये) आपने कहा नहीं। जाओ इसको दूध पिलाओ। यहाँ तक की यह रोटी का टुकड़ा खाने लगे। फिर जब उस बच्चे का दूध छूट गया और वह कुछ खाने लगा तो फिर यह उसको ले कर हाजिर हुई और उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने इसका दूध छुड़ा दिया है और यह खाने लगा है (अतः मुझ पर हद जारी कर दी जाये) आपने लड़के को ले कर मुसलमानों में से एक व्यक्ति के हवाले कर दिया। फिर आपके आदेश से उसके सीने तक का एक गड्ढ़ा खोदा गया (जिसमें उसको सीने तक गाड़ के) उसको लोगों ने पत्थरों से मार डाला। इन संगसार करने वालों में खालिद पुत्र वलीद रज़ि0 भी थे, उन्होंने एक पत्थर उठा कर उसके सर पर मारा उस से जो खून निकला तो ख़ालिद के चेहरे तक उसके छीटें आईं। उन्होंने उसको कुछ बुरा भला कहा जिसको अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने सुन लिया तो आपने ख़ालिद से फरमाया उसको बुरा भला न कहो। कसम उस ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है उसने ऐसी तौबा की है कि अगर अवैध टैक्स वसूल करने वाला कोई जालिम भी ऐसी तौबा करे तो बख़्शा जाये। फिर हुजूर सल्ल0 के हुक्म से उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गयी और वह दफ़न कर दी गयी।

(सही मुस्लिम)

एक सर्वथा दुन्या परस्त और आखिरत का इनकार करने वाले के नज़दीक यह कार्य पूर्णतया मूर्खता और पागलपन है। एक आदमी अपना ढका छिपा ऐब ज़ाहिर करे और अनावश्यक अपने शरीर को अज़ाब में डाले। लेकिन एक मोमिन के नज़दीक इससे बढ कर कोई समझदारी का कार्य नहीं हो सकता कि आख़िरत के अजाब के मुकाबले में दुन्या के अज़ाब को सहन करे, इसलिए कि उसके नज़दीक आख़िरत का अज़ाब बड़ा, ज़ियादा लम्बा, ज़ियादा रुसवा करने वाला और ज़ियादा कष्ट दायक है।

अनुवादः— *और आख़िरत का अज़ाब बहुत कठोर और बहुत देर तक बाक़ी रहने वाला है। (सूरः ताहा 127)*

अनुवाद— *और आख़िरत का अज़ाब अधिक अपमानजनक है। (सूरः हामीम सजदा 16)*

अनुवाद— *निःसंदेह यह लोग बस दुन्या से प्रेम करने वाले हैं और आखिरत का अजाब तो और भी सख़्त है, और वहां उनको कोई अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला न होगा। (सूरः अर्रअ़द 34)*

और इस अक़ीदे का नतीजा यह होता है कि आदमी दुकेले अकेले में समान रूप से कानून का पाबन्द, सावधान और खुदा परस्त रहता है और जहाँ उसको देखने वाला और उससे सवाल करने वाला कोई नहीं होता वहाँ भी उससे आचरण व दियानत के खिलाफ कोई बात नहीं होती।

मदायन की विजय में लोगों ने मालेगनीमत (युद्ध के पश्चात मिला माल) में ईरान के बादशाहों का फर्श लिया जो लाखों रूपये की मालियत का था, और सुरक्षित सेनापति के पास पहुंचा दिया। इसी तरह एक मामूली सिपाही को किस्रा का बहुमूल्य जड़ाऊ वाला ताज हाथ आया। उसने भी इसको सरदार के हवाले कर दिया। हज़रत साद रज़ि0 ने जब यह सामान हज़रत उमर को भेजा, और उन्होंने इसको माले–गनीमत में देखा तो उनकी ज़बान से सहज ही निकल गया ''जिन लोगों ने इन बहुमूल्य चीज़ों को हाथ नहीं लगाया और उनकी नीयत ख़राब नहीं हुई निश्चय ही वह बड़े नेक लोग हैं।''

आखिरत के अक़ीदे का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होता है कि इन्सान में दुन्या की तकलीफ़ों, जिन्दगी की कटुताओं और असफलताओं को सहन करने की जबरदस्त ताक़त पैदा हो जाती है, जो एक आख़िरत का इन्कार करने वाले में नहीं होती।

यह विश्वास रखना है कि केवल यही ज़िन्दगी नहीं है, बल्कि इसके बाद की दूसरी ज़िन्दगी है जो हमेशा रहने वाली है और जो सांसारिक जीवन के कानून के अधीन नहीं है। इसलिए अगर वह मोमिन है और अच्छे कर्म करता है तो उसको विश्वास है कि उसकी सारी तकलीफ़ों का वहां बदला मिलेगा। यह चार दिन की ज़िन्दगी तो किसी न किसी तरह गुज़र जायेगी, फिर वहां इसका ख़्याल भी नहीं होगा। और आख़िरत का अक़ीदा, अल्लाह के दर्शन का शौक, जन्नत की ललक इन्सान में ऐसी लगन पैदा कर देता है जो दूसरी तदबीरों और वीर रस की कविताओं और दूसरे तरीक़ों से मुमकिन नहीं मोमिन अपनी जान को एक बिका हुआ सौदा समझता है जिसकी क़ीमत उसको जन्नत के रूप में मिलेगी–

अनुवाद– *अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जान और उनके माल, जन्नत के बदले में खरीद लिए हैं, यह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं, इसी पर सच्चा वादा है।*

(सूरः अत्तौबः 111)

इसी अक़ीदे ने मुसलमानों में जान देने के लिए वह बेक़रारी और इस्लाम के लिए जान न्योछावर कर देने की वह भावना पैदा कर दी जिसकी मिसाल नहीं मिलती। मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि दुश्मनों की मौजूदगी में हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 का यह कथन सुना कि, ''जन्नत के दरवाजे तलवारों के साये के नीचे हैं''। एक व्यक्ति जो परेशान हाल था, फटे कपड़े पहने हुए था, खड़ा हुआ और कहा कि ऐ अबू मूसा! क्या तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से सुना है? उन्होंने कहा हाँ!

शेष पृष्ठ .....33....पर

ख़िलाफ़ते राशिदा

—मौलाना गुलाम रसूल मेहर —प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

हज़रत अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहू

प्रारम्भिक हालातः—

हज़रत अली रज़ि0 रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई थे, पूरी तरबियत (शिक्षा दीक्षा) रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आग़ोशे रहमत में पाई, अबू तालिब ने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की परवरिश की थी, और नबूवत के बाद तमाम मुसीबतों में सहारा बने रहे, ख़ुद भी बड़ी तकलीफ़ें उठाईं, वह बहुत बच्चे वाले थे और हाथ तंग था, रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके बेटों में से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु को अपने घर ले आये हज़रत अब्बास रज़ि0 दूसरे बेटे हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 को अपने घर ले आये।

हज़रत अली रज़ि0 नबूवत से दस वर्ष पहले पैदा हुए, बच्चों में सबसे पहले मुसलमान वही थे, जब रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एलानिया इस्लाम की दावत देने का हुक्म हुआ तो खानदाने हाशिम के लिए एक दावत का इन्तिज़ाम किया गया। हज़रत अली रज़ि0 अगरचि उस समय तेरह वर्ष के थे लेकिन उन्होंने सारा इन्तिज़ाम किया और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत पर खानदान में से वही लब्बैक (हम हाज़िर हैं) कह कर खड़े हुए, हिजरत के मौक़े पर हज़रत अली रज़ि0 ने जांनिसारी और फ़िदाकारी का जो बेमिसाल मुज़ाहिरा किया, उसका हाल हम रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत में बयान कर चुके हैं।

शादी और ग़ज़वातः—

रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे प्यारी बेटी जन्नती औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं, हिजरत के दूसरे साल उनकी शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दी, दोनों जहां के सारदार रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी का जहेज यह थाः—

एक चारपाई, एक बिस्तर, एक चादर, दो चक्कियाँ और एक मशकीज़ह (छागल)।

हज़रत अली रज़ि0 शुजाअत का पैकर (वीरता की आकृति) थे, तमाम ग़जवात में नुमायाँ कारनामे अनजाम दिये, बद्र में दुशमन ने मुबारज़त संग्राम की सदा लगाई तो जो पहले आगे बढ़े उनमें हज़रत अली रज़ि0 भी थे, उहद में बड़ी मर्दानगी से लड़े, ख़न्दक़ में इब्न अब्द को हज़रत अली रज़ि0 ने मारा था, और ख़ैबर का सबसे बड़ा क़िला हज़रत अली रज़ि0 ही ने सर किया था।

ख़िलाफ़तः-

हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद तीन दिन तक ख़िलाफ़त का मनसब ख़ाली रहा, सबकी नज़रें हज़रत अली रज़ि0 पर पड़ी थीं, लोग इसरार करते थे कि आप ख़िलाफ़त क़बूल कर लें, लेकिन आप इनकार फ़रमाते रहे, बड़े चिन्तन और विचार के बाद आप इस ख्याल से राज़ी हुए कि उम्मत का शीराज़ह बिखरने का अन्देशा पैदा हो गया था। चुनांचि 21 ज़िलहिज सन् 35 हिज्री सोमवार के दिन मस्जिद नबवी में आपकी बैअत हुई, उस समय हालात बड़े नाज़ुक थे, फ़ितने सर उठा चुके थे गिरोह बन्दियाँ शुरु हो गईं थीं, व्यवस्था और प्रबन्ध का ढाँचा बिगड़ चुका था।

शुरु में इन्कार की वजह शायद यह थी कि अफ़रातफ़री की हालत पैदा हो गई है। मगर जब यक़ीन हो गया कि मूल व्यवस्था ही खतरे में घिर गई है यदि उसे साहस और शक्ति से संभाला और ठीक न किया गया तो नहीं मालूम कैसी ख़ौफ़नाक हालत पैदा हो जाये, हज़रत अली रज़ि0 ने ख़िलाफ़त की बागडोर संभाली और अपने शासन काल का एक एक पल हालात के सुधारने में बसर किया इसी प्रयास और परिश्रम से शहादत की मंज़िल पेश आई।

हज़रत उस्मान रज़ि0 के क़ातिलों का मुआमलाः-

सब से पहला काम यह था कि हज़रत उस्मान रज़ि0 के कातिलों का पता चला कर उन्हें उचित सज़ा दी जाती, हज़रत अली रज़ि0 ने बैयत के साथ ही क़ातिलों की खोज लगाना शुरु कर दिया, कत्ल की चश्मदीद गवाह हज़रत उस्मान रज़ि0 की बीवी थीं, वह हज़रत मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ि0 के सिवा किसी को पहचानती न थीं, हज़रत मुहम्मद बिन अबी बक्र रज़ि0 से पूछा गया तो उन्होंने साफ़ साफ़ बता दिया कि मैं ज़रूर क़त्ल के इरादे से घर में घुसा था लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि0 की इस बात से नादिम हो कर चला गया कि अगर तुम्हारे बाप (हज़रत अबू बक्र रज़ि0 होते तो मेरी सफ़ेद दाढ़ी का सम्मान करते) अस्ली क़ातिल दो और आदमी थे जिन्हें मैं नहीं पहचानता, हज़रत उस्मान रज़ि0 की बीवी ने भी यही गवाही दी कि मुहममद बिन अबी बक्र रज़ि0 क़ातिल न थे, इस तरह सारा मुआमला संशय पूर्ण हो गया।

व्यवस्था एवं प्रबन्ध का आरम्भः-

इसके साथ ही हज़रत अली रज़ि0 के लिए यह ज़रूरी काम था कि व्यवस्था और प्रबन्ध के संबंध में विश्वास और संतोष की जो रुह समाप्त हो चुकी थी उसे नये सिरे से पैदा करते, उसका सबसे अच्छा उपाय यही था कि हज़रत उस्मान रज़ि0 के ज़माने के तमाम अधिकारियों और कर्मचारियों को अलग कर के नये कर्मचारियों को नियुक्त करें

ताकि आम लोगों को यक़ीन हो जाये कि हालात के सुधार का काम शुरु हो चुका है, इसका नतीजा यह निकला कि अफ़रा तफ़री पैदा हो गई ख़ासतौर पर शाम के लिए जो गवर्नर नियुक्त हुआ था अमीर मुआविया रज़ि0 ने उसे रास्ते ही से लौटा दिया, यह नये झगड़ों की शुरुआत का निशान था, हज़रत अली रज़ि0 इन झगड़ों को आसानी से मिटा सकते थे और उन्होंने मिटाने का फ़ैसला भी कर लिया था कि अचानक एक नया विवाद खड़ा हो गया।

हज़रत आयशा रज़ि0 हज के लिए गई हुई थीं उनके पीछे हज़रत उस्मान रज़ि0 शहीद हुए थे वह हज से लौटीं तो रास्ते में मदीने के आदमी मिले उन्होंने सारे हालात बताये साथ ही कहा कि मदीने में फ़ितने का बाज़ार गर्म है, हज़रत आयशा रजियल्लाहु अन्हा यह सुन कर मक्का लौट गईं, इसी बीच हज़रत तलहा रज़ि0 और हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 भी पहुँच गये मदीने में हज़रत अली रज़ि0, क़ातिलों की पूरी इन्क्वारी करा चुके थे और कोई सुराग़ नहीं मिला था, यह तफ़सीलात बाहर के लोगों को मालूम न थी। उन सब के दिल पर यह असर हुआ कि क़ातिलों को सज़ा देने में तअम्मुल (संकोच) किया गया, इस ग़लतफहमी की वजह से विभिन्न ज़बानों पर यह मांग बढ़ गई कि हज़रत उस्मान रज़ि0 के ख़ून का बदला लिया जाये, हज़रत आयशा रज़ि0 भी इस आवाज़ से प्रभावित हुईं, वह हालात के सुधार के लिए मदीना जाना चाहती थीं। लेकिन लोगों ने इसरार किया कि इराक़ पहुंच कर बदले का मुतालबा करना चाहिए।

रौशन हक़ीक़त (उज्जवल वास्तविकता):-

यह रौशन हक़ीक़त बहर हाल पेश नज़र रखनी चाहिए कि हज़रत अली रज़ि0 ने अस्ली क़ातिलों की तफ़तीश में कोई दक़ीक़ा (रहस्य) भी उठा नहीं रखा था, जो लोग हज़रत उस्मान रज़ि0 के ख़ून का मुआमला पेश कर रहे थे उनके दो गिरोह थे, एक गिरोह क़ातिलों को सज़ा दिलाने के मुआमले में वाक़ई मुख़लिस (वास्तविक सत्यप्रिय) था और हज़रत अली ख़ुद इसमें शामिल थे, मगर इस गिरोह के अफ़राद को सही हालात का इल्म न था, और हज़रत अली के सिवा कोई नहीं जानता था कि मुआमले ने क्या सूरत इख़्तियार कर ली है। दूसरे गिरोह ने इस मांग को फ़ितना अंगेज़ी, उपद्रव के बढ़ाने का साधन बना लिया था, वह लोग चाहते थे कि आग खूब भड़क उठे और शान्ति की स्थापना की नौबत न आये क्योंकि शान्ति की स्थापना के बाद पूछगछ का काम शुरु हो जाता है। यह दोनों गिरोह इस तरह मिल जुल गये थे कि उन्हें एक दूसरे से अलग करना मुश्किल हो गया था। हज़रत तलहा रज़ि0 और हज़रत ज़ुबैर रज़ि0

शेष पृष्ठ .....24....पर

कोरोना ने दीनी मकातिब को ठप कर दिया

—इदारा

भारत देश विशेष कर उत्तरी भारत में मुसलमानों ने दीनी मकातिब का जाल बिछा रखा था हर गाँव हर क़स्बे में दीनी मकातिब थे इन मकातिब में दीन की बुन्यादी बातें पढ़ाई ताजी हैं पहला और दूसरा कलमा याद कराया जाता है रात दिन की ज़रूरी दुआ़एं याद कराई जाती हैं अरबी काइदा पढ़ा कर नाज़रा कुर्आन शुरु कराया जाता और ख़त्म कराया जाता, नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा सिखाया जाता और नमाज़ की अमली मशक कराई जाती, जुबान खासतौर पे उर्दू जुबान पढ़ाई जाती गिन्ती और पहाड़ा याद कराया जाता जोड़ घटाव सिखाया जाता आगे चल कर हिन्दी भी पढ़ाई जाती और प्राइमरी कोर्स सरकारी स्कूलों से अच्छे ढंग पर पूरा कराया जाता मकातिब के टीचरों की तन्ख़्वाह ख़ुद मकातिब के टीचर या मकातिब के प्रबन्धक दीनदार मुसलमानों से चन्दा ले कर अदा करते आज न तो मुसलमानों से चन्दा हो रहा है न बच्चों की तालीम हो रही है लाखों मुस्लिम बच्चों की तालीम रुक गयी और हज़ारों मकातिब के मुदर्रिसीन की नौकरी छूट गयी। इस नुक़सान का मुसलमानों को जितना दुख हो कम है यह हाल तो दीनी मकातिब का हुआ रहे बड़े मदरसे जैसे दारुल उलूम देवबन्द दारुल उलूम नदवतुल उलमा जिनका बजट करोड़ों का है जिनके सैकड़ों मुहस्सिलीन पूरे मुल्क में सफर कर कर के चन्दा लाते थे वह सब अचानक बन्द हो गया उनकी आमदनी लगभग ठप हो गयी अभी तक इन बड़े मदरसों ने अपने स्टॉफ को जवाब नहीं दिया उनकी तनख़्वाहें दे रहे हैं यह ख़र्च हो सकता है यह बड़े इदारे अपनी बची हुई आमदनी से बर्दाश्त कर रहे हों या फिर धनवान मुसलमान इनकी मदद कर रहे हों मगर यह गाड़ी कब तक और कैसे चलेगी अल्लाह ही बेहतर जाने, मदरसे खोलने की इजाजत नहीं है तलबा की तालीम कैसे पूरी होगी समझ में नहीं आता यह वह नुक़सान है जिसकी भरपाई कैसे होगी समझ में नहीं आता। अल्लाह तआला हम मुसलमानों की मदद फरमाये और ऐसे हालात आएं कि बड़े—बड़े मदरसे और मकातिब अपना काम करने लगें। ◆◇◆

बेजान अपीलों में कोई ताक़त नहीं

—मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी

आज हमारा हाल यह है कि हमें सारी ख़राबियाँ अपने आप और घर से बाहर नज़र आती हैं इसीलिए हमारा पूरा ज़ोर व समय दूसरों की आलोचना और लानत मलामत में गुज़रता है लेकिन यह ख़्याल कभी मुश्किल ही से आता है कि हमारा व्यक्तित्व और हमारा घर भी किसी तब्दीली का मोहताज है, दीनदार से दीनदार लोगों के घरों का माहौल धीरे धीरे ज़माने की बुरी हवाओं से प्रभावित हो रहा है और वह एक एक कर के पश्चिमी सभ्यता की तमाम लानतों के आगे नतमस्तक होते चले जा रहे हैं घर की औरतों के दिल से इस्लामी पर्दे की अहमियत का एहसास उठ रहा है, मगर उन्हें समझा बुझा कर आमादा करने के बजाए आखें मूंद ली जाती हैं जिसका नतीजा यह है कि घर घर बे पर्दगी का सैलाब उमड़ आया है, औलाद कमाई के नाजायज़ तरीके इख़्तियार करती है तो उसको रोकने टोकने के बजाए व्यवहारिक रूप से उसकी हिम्मत अफजाई की जाती है, नतीजा यह है कि धीरे धीरे ही सही हलाल हराम का फ़र्क़ उठ चुका है और हराम कमाई से नफ़रत का कोई शोशा दिल में बाक़ी न रहा।

समाज में फैली हुई बुराईयों की सूची बड़ी लम्बी है लेकिन इस समय जिस ओर ध्यान दिलाने का उद्देश्य है वह यह है कि हमारे देश में समाज सुधार के अलमबर्दार चाहे वह हुकूमत से तअल्लुक रखते हों या अवामी अंजुमनों और इदारों से, अगर उनके दिल में मिल्लत का दर्द और क़ौम की फिक्र है, अगर वाक़ई उनका दिल मुसलमानों की दुर्दशा पर तड़पता है तो उनका कर्तव्य यह है कि वह आगे बढ़ने से पहले स्वयं अपने और अपने घर के हालात का अवलोकन करें, एक मर्तबा हिम्मत कर के अपने घरों को उन लानतों से पाक कर डालें जो हमारे समाज को घुन की तरह चाट रही हैं, उसके बाद जब वह समाज सुधार के अभियान को ले कर आगे बढ़ेंगे तो न सिर्फ़ यह कि उनकी बात में असर होगा बल्कि उनका एक एक अमल और एक एक अंदाज़ लोगों पर असर अन्दाज़ हो सकेगा, वरना यह क़ौम उपदेश और बेजान अपीलें ज़माने से सुन रही है इन बेजान अपीलों में यह ताक़त नहीं कि वह समय के धारे को मोड़ सकें। ◆◇◆

नअ़त

—शौकत नियाज़ी

अब्दुल्लाह के राजदुलारे
आमिनः की आँखों के तारे,
अहमद प्यारे नबी हमारे,
हैं मानव में सबसे उत्तम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

सीधा मार्ग दिखाया हम को,
ईश्वर-भक्त बनाया हम को,
सत्य का पाठ पढ़ाया हम को
और सिखाया निग्रह संयम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

ईश्वर का सन्देश सुनाया,
उस पर कर के अमल दिखाया,
चरवाहों को सभ्य बनाया,
नबी हमारे गुरु हैं अनुपम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

कष्ट सहे पर काम न छोड़ा,
जीवनधारा का रुख़ा मोड़ा,
गर्व वंश, बरन का तोड़ा,
दया, प्रेम, धीरज के उद्गम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

रब ने अपने पास बुलाया,
साक्षात सब भेद बताया,
स्वर्ग-नरक का दृश्य दिखाया
सत्य-ज्ञान ले आए प्रीतम,
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

प्रचार एवं प्रसार के साधन क़ुरआन की रोशनी में

—हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः मौलाना मु0 गुफ़रान नदवी

प्रचार एवं प्रसार की उपयोगिता, वास्तव में मानव जीवन के लिए अच्छे आदर्शों का परिचय कराना है ताकि जिन्दगी को अच्छा बनाने, ग़लत रास्तों से हट कर उचित मार्ग पर लाने के लिए ध्यान दिलाया जा सके। इसी के साथ साथ, ज़िन्दगी के लिए सुकून व आराम देह माहौल बनाने का फ़ाइदा हासिल हो लेकिन इसके विपरीत कभी कभी इन्सान अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पूरी करने के लिए ग़ैर अख़लाक़ी रास्ता इख़्तियार करता है, इससे उसके नफ़्स की तसकीन तो होती है लेकिन उसका यह तरीक़ा लाभदायक के बजाये हानिकारक होता है जैसा कि आज की उन्नतिशील दुन्या में ज़ियादा तर हो रहा है। रचनात्मक कामों के प्रचार एवं प्रसार के अच्छे नमूने कुर्आन शरीफ़ और हदीस शरीफ़ में मिलते हैं।

पिछली क़ौमों और उनमें अल्लाह की तरफ़ से भेजे गये अम्बिया अलैहिस्सलाम के वाक़िआत कुर्आन शरीफ़ में जिस तरह बयान किये गये हैं, वह प्रचार में उच्चतर उद्देश्य को पूरा करने की उत्तम मिसाल हैं, ख़ास तौर पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िया जिस में इन्सान की विनाशाजनक भावनाओं की अक्कासी (प्रतिरूप) उनके भाइयों के व्यवहारिक संबन्ध में मिलती है और ज़िन्दगी की कठिनाइयों में सब्र से काम लेना और पाक दामनी की आला मिसाल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में मिलती है, उन्होंने क़ैद की हालत में समझदारी और शान्ति के साथ अपने ज़माने के बादशाह का सद्भाव प्राप्त किया, उससे बढ़ कर वह बादशाह के परामर्शदाता बने, अपनी इस कामयाबी को ख़ुद उन्होंने अपने मालिक रब्बुलआलमीन का शुक्र अदा करते इस तरह ज़ाहिर किया "जो एहतियात तथा सावधानी की ज़िन्दगी अपनाये और सब्र व बरदाश्त सहनशीलता और सन्तोष से काम ले तो अल्लाह तआला ऐसे अच्छे काम करने वाले के अज्र (प्रतिदान) को नष्ट नहीं करता, यह सब बयान कुर्आन शरीफ़ में ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुकून और ताक़त पहुंचाने के लिए और सारे ईमान वालों को अच्छे ढंग से कामयाबी हासिल करने का रास्ता दिखाने के लिए बयान किया गया है। यह व्यक्तिगत जीवन संबन्धित मिसाल है, यह मिसाल सामूहिक जीवन से भी संबन्ध रखती है वह इस तरह कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर जब तोहमत लगाई गई और सामूहिक स्तर पर भी उनको गिराने की कोशिश की गई तो उन्होंने उसके जवाब में अपने परवरदिगार से दुआ का ज़रिया इख़्तियार करते हुए हालात पर सब्र किया और जो पेश आया

उसको बरदाश्त किया।

सामूहिक रूप की अहम मिसाल कुर्आन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वाक़िआत के बयान में मिलती है कि मुल्क का डिकटेटर अपने मुल्क की बहुसंख्यक जनता का शासक पूरे डिकटेटरी शान से अल्पसंख्यक जनता के साथ पूरे जुल्म जब्र के साथ पेश आ रहा था और अल्पसंख्यक जनता जुल्म झेल रही थी और कुछ कर नहीं सकती थी बल्कि ख़तरात बढ़ते जा रहे थे लेकिन उसी अल्पसंख्यक के एक बच्चे को कुदरत की तरफ़ से डिकटेटर के घर पहुंचा दिया गया और वह उसको साधारण समझ कर परवान चढ़ने देता रहा, और वह जब बड़ा हुआ तो उसकी वीरता और साहस का वाक़िआ देख कर उसके खिलाफ़ सख़्त कार्रवाही का मौक़ा आया और वह नवजवान साम्राज की सीमा से गुप्त रूप से बाहर चला गया और एक अपरिचत माहौल में प्रदेसी और बे सहारा हैसियत से अपने भविष्य को सोचने लगा और कुदरत की रहमत व करम करुणा व दया का मुन्तज़िर हो कर आगे बढ़ता रहा फिर हालात साथ देते चले गये, वह बड़ा हो कर मजबूत और हुनरमन्द इन्सान बन कर लौटा तो कुदरत की तरफ़ से उसको पैग़म्बर व मुसलेह (सुधारक) बना कर उस डिकटेटर के पास भेजा गया और फिर उस डिकटेटर से उसके जो डायलाग हुऐ जिसमें वह उस डिकटेटर को ऐसा लाजवाब कर देता था कि वह पेच ताब खा कर रह जाता और उसका कुछ बिगाड़ न सका वह नबूवत पर फ़ाएज़ शख़्स यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उस डिकटेटर यानी फ़िरऔने मिस्र को बराबर समझाता, अपने सुधार की ओर ध्यान दिलाता और अल्पसंख्यक के साथ जुल्म अत्याचार को मना करता रहा बरसों गुज़रे और डिकटेटर ने अपना सुधार न किया पैग़म्बर और उनकी क़ौम ने बराबर सब्र से काम लिया, अन्ततः कुदरत की ओर से कुदरती सज़ा दी गई, उस सज़ा ने डिकटेटर को उसकी फ़ौज के साथ तबाह कर दिया, अल्पसंख्यक को छुटकारा बल्कि जांनशीनी मिली, यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का वाक़िआ था, जो कुर्आन मजीद में विभिन्न पहलुओं को पेश करते हुए बयान किया, ताकि उस समय की मुस्लिम अल्पसंख्यक जो बहुसंख्यक के बीच जुल्म सह रही थी उसको तसकीन हासिल हो कि किसी के डिकटेटर बन जाने पर यह ज़रूरी नहीं कि वह जो चाहे करे, कुर्आन मजीद में यह हालात इस तर बयान किये गये कि उनसे इनसानी मनोवैज्ञानिक हालात का पता चलता है और कठिनाइयों का समाधान भी सामने आता है।

कुर्आन मजीद में विभिन्न क़ौमों के इनसानी कैरेक्टर के नाना प्रकार के हालात को बयान किया गया है कि जिससे इनसान को अपनी जिन्दगी की कठिनाइयों में मार्गदर्शन मिले और इनसानी ज़िन्दगी के हालात से निपटने में मदद मिले, इसलिए कि इनसान अपनी ज़िन्दगी को

दूसरे इनसानों की ज़िन्दगियों की मिसालों से संवारता और बनाता है और अच्छे बुरे के अन्तर को पहचानने में मदद लेता है ऐसी मिसालों को जानकार दूसरे के ज्ञान और लाभ के लिए बयान करता है ताकि वह दूसरों तक उसको पहुंचाये।

इस विषय में कुर्आन से बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं, जिनमे व्यक्तिगत स्तर से मनोवैज्ञानिक बातें जगह जगह बताई गई हैं, जिनसे इनसान के चिन्तन वर्ग की जानकारी में वृद्धि भी होती है, मिसाल के तौर पर "सूरः तकासुर" में यह इनसानी हाल बयान किया गया है कि इनसानों पर माल बढाने का शौक़ इतना बढ़ जाता है कि वह अपनी तमाम मसलहतों को छोड़ कर उसमें डूब जाता है और फिर उस का नतीजा सब कुछ छोड़ कर दूसरी ज़िन्दगी में खाली हाथ दाखिल हो जाता है जहां उसका माल कितना भी ज़ियादा रहा हो, काम नहीं आता, अमरीका के एक मुसतशरिक़ (प्राच्यविद्या विशारद) ने भी सूरः तकासुर के हवाले से अपना एक प्रभावशील प्रत्यक्ष दर्शन लिखा है।

इसी प्रकार सूरः मुतफ़फिफीन में इनसान की उस ज़ियादती और नाइन्साफ़ी का तज़किरा मिलता है कि माल की महब्बत रखने वाला व्यापारी नापतौल में बहुत बेइन्साफी से काम लेता है। इसके अलावा भी इनसानी ज़िन्दगी में पेश आये हुए मनोवैज्ञानिक पहलुओं का बयान हम को कुरआन मजीद में जगह जगह मिलता है उनमें उसकी ओर ध्यान दिलाया गया है कि उनकी रोशनी में अपनी ज़िन्दगी के लिए सबक़ हासिल करे, यह इनसानी समाज में पेश आने वाले वाक़िआत और कौमों के सबक़ आमोज़ (शिक्षाप्रद) हालात में बयान किया गया है, और यह मिसालें हम को प्रचार और प्रसार के विषय में बड़ी रोशनी और रहनुमाई देती हैं। यह सब प्रचार प्रसार की रचनात्मक लाभदायक और मक़सद को पूरा करने की आला मिसालें हैं।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

तौहीद पर कायम रहे फिर कुछ महापुरुषों के लोगों ने चित्र बना लिए ताकि यादगार रहे, धीरे धीरे यहीं से मूर्ति पूजा शुरु हुई तो अल्लाह ने हज़रत नूह को भेजा, हजरत नूह अ़लैहिस्सलाम के वाक़िये को विस्तृत रूप से सूरः हूद में और सूरः नूह में बयान किया गया है।

◆◇◆

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ख़िलाफ़ते राशिदा.....

को कूफ़े में हज़रत अली रज़ि0 से मिलते ही वास्तविक हालात का इल्म हो गया और सुलह हो गई, बाक़ी लोग नियमानुसार विरोध करते रहे।

❖❖❖

माफ करने की फज़ीलत

जो गुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के कुसूर माफ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत पसंद हैं।

(सूरः आले इमरान-134)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख़्स मुहलिक मरज़ में मुब्तला था, सरकार की तरफ़ से मेडिकल इम्दाद की रक़म मिली, वह अभी ख़र्च नहीं हुई कि मरीज़ का इन्तिक़ाल हो गया, वह रक़म मरहूम की बीवी के क़ब्ज़ा में है, क्या इसमें सिर्फ बेवा का हक़ है, या दीगर वरसा का भी।

उत्तरः यह इम्दाद मरीज़ को मिली थी इस की मिल्क है, मरने के बाद बची हुई रक़म माले मतरूका में शामिल होगी और तमाम वरसा इसके हक़दार होंगे, क़ब्ज़ा कर लेने की वजह से तन्हा बेवा हक़दार नहीं होगी।

(रद्दुल मुख़्तारः 10/493)

प्रश्नः एक शख़्स ने एक ऐसी बिल्डिंग छोड़ी जो किराया पर थी, इस बिल्डिंग का वह हिस्सा जिस में मरहूम अपनी अहलिया के साथ रहा करते थे, इसका वसीयत नामा अहलिया के नाम लिख दिया था, अहलिया ने किराया की रक़म वसूल की है, दीगर वरसा इस किराया में हिस्सा मांग रहे हैं, और वसीयत वाले हिस्सा को भी तस्लीम नहीं कर रहे हैं, क्या यह वसीयत दुरुस्त है? क्या किराया की रक़म सब को मिलेगी?

उत्तरः बीवी के हक़ में वसीयत मोतबर नहीं जब तक दूसरे वरसा रज़ामन्द न हों, इसलिए बिल्डिंग का वह हिस्सा जिस में वह वसीयत की है बगैर तमाम वरसा की इजाज़त के मरहूम की ज़ोजा नहीं ले सकती है, और किराया तमाम वरसा में हस्ब शरई तक़्सीम होगा।

(रद्दुल मुख़्तारः 10/493)

प्रश्नः एक शख़्स के कई लड़के हैं सिवाए एक के सब की शादी कर दी थी, फिर इन का इन्तिक़ाल हो गया, जिस लड़के की शादी नहीं हुई थी वह शादी के इख़्राजात मरहूम के माल मतरूका में से मांग रहे हैं, क्या माले मतरूका से खर्च किया जा सकता है?

उत्तरः जिन लड़कों की शादियाँ बाप ने अपनी हयात में कर दीं, वह उनकी तरफ़ से एहसान और तबर्रो है, और जिन की शादी नहीं हुई और बाप का इन्तिक़ाल हो गया तो अब माले मतरूका में से गैर शादी शुदा लड़के की शादी के इख़्राजात नहीं लिए जा सकते हैं क्योंकि माले मतरूका में अब तमाम वरसा का हक़ वाबस्ता हो गया है।

(रद्दुल मुख़्तारः 10/493)

प्रश्नः जिस माल की ज़कात अदा नहीं हुई और सालहा साल से अदा नहीं हुई, मालिक का इन्तिक़ाल हो गया, क्या वरसा के लिए बतौर विरासत इस माल को लेना दुरुस्त है? क्या वरसा के जिम्मे इस माल की जकात अदा करना वाजिब है?

उत्तरः जो माल छोड़ कर कोई दुन्या से चला जाये अगर्चे इस की ज़कात अदा नहीं हुई है वह वरसा का

होगा और वरसा के ज़िम्मा इस की ज़कात अदा करना वाजिब नहीं है, अलबत्ता अगर ज़कात अदा करने की वसीयत की हो तो उस की ज़कात एक तिहाई माल से अदा की जायेगी।

(रद्दुल मुख़्तारः 5/536)

प्रश्नः एक शख़्स की बीवी ने शौहर के इन्तिक़ाल के वक़्त महर मुआफ़ कर दिया लेकिन अब वह किसी वजह से माले मतरूका में से महर का मुतालबा कर रही है, मुआफ़ किया हुआ महर माले मतरूका में से दिया जा सकता है?

उत्तरः दैन महर मुआफ़ करने से मुआफ़ हो गया, अब उसके मुतालबा का हक़ नहीं है, और माले मतरूका में से मुआफ़ शुदा महर नहीं दिया जा सकता है।

(अद्दुर्रे मुख़्तार माए रद्दुल मुख़्तारः 8/248)

प्रश्नः अगर किसी की औलाद ना फरमान हो और वालिदैन के साथ बुरा सुलूक कर रही हो तो क्या वालिदैन अपनी विरासत से महरूम कर सकते हैं? महरूम करने की वजह से वालिदैन गुनहगार तो नहीं होंगे?

उत्तरः विरासत एक ऐसी मिल्क है जो गैर इख़्तियारी है वालिदैन को यह हक़ हासिल नहीं है कि अपने बाद वरसा में से किसी को वरासत से महरूम कर दें, शरीअत ने जो हिस्सा जिस वारिस के लिए मुतअय्यन कर दिया है वह उसे ज़रूर मिलेगा ख़्वाह मूरिस राज़ी हो या नाराज़, अलबत्ता अस्ल मालिक को इख़्तियार है कि अपनी ज़िन्दगी और हालते सेहत में अपनी मिल्क में जिस तरह चाहे तसर्रुफ़ करे।

(फ़तावा हिन्दियाः 4/391)

प्रश्नः अगर औलाद शरीर हो, और बाप को यह ख़्याल हो कि मेरे बाद तमाम जायदाद ख़ुदा की नाफ़रमानी में सर्फ कर देगा, इसलिए वह कारे ख़ैर में उन जायदादों को सर्फ कर दे तो क्या ऐसा करना दुरुस्त होगा?

उत्तरः औलाद के शरीर होने की वजह से वालिदैन को यह ख़दशा हो कि यह जायदाद ख़ुदा की नाफरमानी में औलाद सर्फ़ कर देगा तो उसे यह हक़ हासिल होगा कि जायदाद को मसारिफ़े ख़ैर में दे दे।

(फतावा हिन्दीयाः 4/391)

प्रश्नः एक शख़्स ने अपनी बीमारी के हालत में अपनी जायदाद और मकान से मुतअ़ल्लिक़ एक एक़रारनामा लिखवा कर रजिस्ट्री करवा दिया है मक़सद यह है कि लड़कियों को इस से बे दख़ल कर दिया जाए, क्या इन जायदादों और मकान से लड़कियाँ महरूम हो जायेंगी?

उत्तरः मरजुल मौत में लिखाया हुआ इक्रार नामा या हिबा नामा वसीयत के हुक्म में होता है, और वसीयत वारिस के हक़ नाफिज़ नहीं होती है जब तक कि दूसरे वरसा इजाज़त न दें, लिहाजा दीगर वरसा की रज़ामन्दी के बगैर यह इक़्रार नामा या हिबा नामा शरअन नाक़ाबिले अमल है और इसमें शरई तौर पर मीरास जारी होगी और लड़कियों का भी इस में हक़ होगा।

(अद्दुरुल मुख़्तार माए रद्दुल मुख़्तारः 8/493)

❖❖❖

कोरोना और दीनी तालीमात व शरई अहकाम

—अबू अहमद नदवी काँधलवी

—हिन्दी इम्लाः राशिदा नूरी

हालात व हवादिस, वबाएँ और अमराज़ कुदरती हों तो भी अल्लाह तआला की तरफ़ से हैं और उसका अज़ाब हैं, ''तर्जुमा— जो भी मुसीबत आये अल्लाह के हुक्म से है।'' और अगर उनमें इन्सानी कोशिशों और कार्यवाइयों का दख़ल हो तो भी वह अल्लाह के लाये हुए और उसकी नाराज़गी का मज़हर हैं, और यह ऐसा ही है जैसा बनी नज़ीर के बारे में सूरः हश्र मे इरशाद फरमाया। अनुवाद— वह खुद अपने हाथों अपने घर उजाड़ने लगे हैं।''

जिस तरह हर बला व हर मुसीबत अल्लाह की तरफ़ से है, इसी तरह एक ही हादिसा किसी के लिए ख़ैर और किसी के लिए शर भी साबित हो सकता है, इब्ने आदम की सियासत के बारे में कहा जाता है कि वह एक तीर से कई शिकार करता है, तो ख़ालिक़े आदम भी अपने बारे में ''खैरुल माकिरीन'' होने का दावा करता है, और वह एक हादिसा या मुसीबत को कुछ लोगों के लिए हलाकत, कुछ के लिए इबरत, और कुछ लोगों के लिए कफ्फारा जुनूब और रफअे दरजात का ज़रिया बना देता है, और उसकी एक चाल कई हदफ हासिल करती है, और उसके नताइज बड़े दूर रस और गहरे होते हैं, ख़्वाह फौरी तौर पर ज़ाहिर हों या देर में।

अल्लाह का अजाब, अल्लाह का अजाब है, उसका तअल्लुक अल्लाह की नाराज़गी से है, अल्लाह की नाराज़गी जहां जुल्म की शिद्दत और कुफ्र की बग़ावत से होती है, वहीं अहले इस्लाम की मासियत पर भी हो सकती है, किसी पर अज़ाब आये तो उस पर बग़लें बजाना नहीं चाहिए, न इतमीनान रखना चाहिए कि हम महफूज़ हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौमे समूद की बस्ती से गुज़र रहे थे तो खुद भी और सहाबा रज़ि0 को भी ख़ौफ़ दिला रहे थे, हालांकि हज़ारों साल पहले उस बस्ती पर अज़ाब आ कर गुज़र चुका था। सच्ची ख़ाशीयत और हक़ीक़ी खौफ यही है। हम देखते हैं कि शाहे वक़्त अगर नाराज हो तो किसी क़रीबी और बेतकल्लुफ़ को भी लबकुशाई की मजाल नहीं होती, और वह ख़ौफ महसूस करता है कि गुस्सा की गाज़ कहीं उस पर भी न गिर पड़े, तो फिर उस ज़ात के ख़ौफ़ का क्या आलम होना चाहिए जो रब्बुल आलमीन और अहकमुल हाकिमीन है, और जिसकी सिफत ''जब्बार व कह्हार'' है। लिहाज़ा जब भी कोई आफत या मुसीबत या वबा ख़्वाह वह गैरों पर आये, कि अपने भी उसका

शिकार हो रहे हों, तो डरना चाहिए कि हम भी उसका शिकार हो सकते हैं और अगर अल्लाह अपने फज़्ल से महफूज़ भी फरमा ले तो उसका शुक्र गुज़ार होने के साथ उससे इबरत और नसीहत हासिल करना चाहिए अल्लाह पाक का इरशाद है, अनुवादः कि हमने उसको अहले ज़माना के लिए भी और बाद वालों के लिए भी इबरत और अहले तक़्वा के लिए नसीहत की चीज़ बना दिया''।

मालूम हुआ कि अहले तक्वा के लिए भी यह नसीहत की चीज़ है न कि खुशियां मनाने और तालियां बजाने की, या ताना देने की, कि देखो कैसे हमारे रब ने तुम्हारी पकड़ की और कैसा अजाब तुम पर नाज़िल किया।

जिस तरह अज़ाब अल्लाह तआ़ला की तरफ से होता है, उसी तरह उसके ज़रिये किसी को हलाक करना और किसी को महज डराना है, और किसी को मुतनब्बह करके हिदायत से सरफराज़ करना है।

उसका फैसला भी अल्लाह तआला करते हैं हमारे अज़ाब अ़ज़ाब चिल्लाने से उनके लिए अज़ाब का इस्बात नहीं होता बल्कि उसका एहसास अल्लाह तआला ही उनके दिल में डालते हैं, हमारे शोर मचाने से हमारा ही मज़ाक़ बनता है। वह कहते हैं कि तुम्हारे नबी के सहाबा भी बड़ी तादाद में ताऊन जैसी वबा का शिकार हुए हैं, और उसका कोई ऐसा जवाब नहीं जो उनकी समझ में आ सके, नतीजे में उनके अन्दर मज़ीद इनाद और जुहूद पैदा होता है और वह संजीदगी से ग़ौर करने और इबरत हासिल करने के काबिल नहीं रहते।

मौत और ज़िन्दगी अल्लाह के हाथ में है, मौत का वक़्त और ज़िन्दगी की मुद्दत तै कर दी गयी है, जिसमें लम्हा भर का फर्क़ नहीं हो सकता।

अनुवादः ''जब किसी की मौत आती है तो अपने मुक़र्रह वक़्त पर आती है, न कुछ वक़्त पहले आ सकी है न ही कुछ देर कर सकती है।''

ताहम किसी को इसकी इत्तिला नहीं कि उसकी मुद्दत उम्र और मौत का दिन और उसका मक़ाम क्या है, अनुवादः ''कोई नहीं जानता कि कल क्या कमायेगा और कोई नहीं जानता कि वह कहां मरेगा''।

लिहाज़ा हर फर्द बशर को अपनी ज़िन्दगी की हिफाज़त और उसके अस्बाब इख़्तियार करने का मुकल्लफ बनाया गया है, यह असबाब का इख़्तियार करना इंफिरादी हैसियत से वाजिब न सही लेकिन इजतमाई और अवामी सतह पर वाजिब हो जाती है इसीलिए बनी इसराईल को फिरऔन के जुल्म व तशद्दुद से महफूज़ रखने के लिए यह हुक्म दिया गया कि ''अपने घरों में ही इबादत करो।'' गरचे यक़ीनी नहीं था कि जो निकलेगा वह मारा जायेगा, लेकिन आम फिज़ा यही थी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी तेज़ बारिश के मौक़े

पर फरमाया कि अपनी क़ियामगाहों पर नमाज़ पढ़ लो, बज़ाहिर यहाँ कोई मौत का अन्देशा नहीं था, अलबत्ता लोगों के कीचड़ में गिरने फिसलने का अन्देशा था, जो तकलीफ का बाइस बन सकता था। ख़िलाफते राशिदा में हज़रत उमर रज़ि0 ने ताऊने उमवास के मौक़े पर जो 17 या 18 हिजरी में शाम में पेश आया था, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि0 को बहाने से अपने पास बुलाना चाहा, हालांकि वह जानते थे कि हदीस में ताऊन की जगह से निकलने की मुमानिअ़त है, और यह भी जानते थे कि मौत का वक़्त मुकर्रर है, लेकिन उन्होंने इज्तिहाद किया और सबब इख़्तियार किया और उम्मत की बहबूद की ख़ातिर हज़रत अबू उबैदह रज़ि0 की ज़िन्दगी बचाने की कोशिश की, दूसरी तरफ यह हज़रत अबू उबैदह रज़ि0 का इन्फिरादी व ज़ाती मसअला था, जिस की बिना पर उन्होंने आना कबूल नहीं किया और यक़ीन व तवक्कुल का मुज़ाहिरा किया, उस मौक़े पर मस्लिहते आ़म्मा को मद्दे नज़र रखते हुए हज़रत उमर रज़ि0 ने ताऊनज़दह इलाक़ा के बाशिन्दों को पहाड़ों पर चले जाने की तल्क़ीन की और लोगों को बाहम मिलने जुलने और इकट्ठा होने से मना फरमाया। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने बाज़ लोगों की मुख़ालिफत के बावजूद उस राय पर अमल किया, और यह राय कारगर साबित हुई और वबा बहुत जल्द ख़त्म हो गयी और लोगों ने सुकून की साँस लिया। यहाँ पर यह नुक़्ता महल्ले ग़ौर है कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने सरकारी फरमान को जो मस्लिहते आ़म्मा पर मबनी था, उस राय पर तरज़ीह दी जो इंफिरादी जज़्बए ईमानी और तवक्कुल व यक़ीन से सरशार थी। हज़रत उमर रज़ि0 की फिरासते ईमानी ने उनको यह राह दिखलाई थी कि आबादी के आ़म मक़ामात पूरी तरह से जरासीम से ग्रसित हो चुके हैं, लिहाज़ा महफ़ूज़ और साफ मक़ाम पर चला जाना बेहतर है। गोया किसी वबा के फैलाव और इंतिशार से बचने के लिए अपनी क़ियाम गाहों में महसूर होना यह दरअस्ल हज़रत उमर रज़ि0 की राय पर अ़मल है, और यह ऐसा ही है जैसा कि उन्होंने उन आ़म मक़ामात से जो जरासीम से मुतअस्सिर है हत्तल इमकान दूरी इख़्तियार करने की बात सोची थी, यह ख़ैरुलकुरून की मिसालें हैं जो ऐसे हालात में हमारे लिए रहनुमा साबित हो सकती है।

इस राय में हदीसे पाक की मुख़ालिफत भी नहीं है, क्योंकि हदीस में मुमानिअ़त इस वजह से है कि लोग अगर मुतअस्सिर हो कर इलाक़े को छोड़ेंगे तो वबा दूसरी आबादियों तक पहुंच जायेगी, गोया आबादी से आबादी में मुन्तक़िल होने की मुमानिअ़त थी, न कि आबादी से वीराने या ग़ैर आबाद जगह की तरफ़।

इस नुक्तए नज़र से देखा जाए तो नबी करीम सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था ''कोई बीमारी मुतअद्दी नहीं होती यानी कोई बीमारी अल्लाह की मरज़ी के बगैर एक से दूसरे को नहीं लग सकती''।

और दूसरे मौक़े पर इरशाद फरमाया था ''कोढ़ के मरीज़ से ऐसे दूर भागो जैसे शेर से दूर भागते हो''। पहला फरमान अकीदा से तअल्लुक़ रखता है और उसकी इस्लाह के लिए है कि मरज़ का मुतअद्दी होना और फैलना भी अल्लाह के हुक्म से होता है और दूसरे फरमान का मतलब है कि मरज़ से बचने के लिए जो असबाब हो सकते हैं उनको इख़्तियार करना चाहिए जिनको जानने के लिए हुकूमतें आमतौर पर माहिरीन की मदद लेती हैं।

यक़ीनन तारीख़ के इन हवालों के साथ हमारे जहन में यह बात भी आती है कि कुर्आन करीम में सलातुल ख़ौफ का तज़किरा है, जिसमें जंग की हालत में भी जमाअ़त न छोड़ने और मैदाने जंग में जमाअ़त से नमाज़ अदा करने की तलक़ीन की गयी है। लेकिन यह भी ग़ौर करना चाहिए कि जमाअ़त का आदेश उसी मक़ाम पर किया गया न कि मस्जिद में, और ऐसे तरीक़े से कि दुश्मन से ग़फलत न पैदा हो और उसके हमले से बचाव हो सके। मौजूदा वबाई मरज़ या कोरोना वायरस जिससे आज दुन्या परेशान है, ऐसी चीज़ है जिससे इस तरीक़े पर जमाअ़त करके भी बचाव मुम्किन नहीं, बल्कि मज़ीद ख़तरा है, लिहाज़ा जहाँ–जहाँ एक से जाइद लोग हैं ख़्वाह घर में हों या कहीं और, उनको जमाअ़त ही से नमाज़ पढ़नी चाहिए, और अगर उनका क़ियाम मस्जिद ही में या उससे मिली हुई जगह पर जहाँ से वह बगैर किसी पाबन्दी के मस्जिद में दाख़िल हो सकते हों, तो उनको मस्जिद में जमाअ़त से नमाज़ पढ़नी चाहिए, ताकि मस्जिदें बिल्कुल वीरान न हों, तहक़ीक़ तो नहीं अलबत्ता उम्मीद है तारीख़ में जब भी इस किस्म का अलमीया पेश आया होगा लोगों ने हत्तल इम्कान कोशिश की होगी कि ख़्वाह दो अफराद ही की सही मस्जिद में जमाअ़त ज़रूर हो।

हालिया वबाई सूरतेहाल में जहां माहिरीन की जानिब से एहतियाती तदाबीर पेश की जा रही है, अ़वाम की ज़िम्मेदारी बनती है कि उन पर अ़मल किया जाये। कोरोना वाइरस से मुतअ़ल्लिक बुन्यादी बातें समझना चाहिए कि यह मुंह और नाक के ज़रिये मुंतक़िल होता है। यह वाइरस ज़ियादा टेम्प्रेचर में ज़िन्दा नहीं रह पाता है, दस से बारह घण्टे इन्सानी जिस्म से बाहर जिन्दा रह सकता है, कूव्वते मुदाफिअ़त कम रखने वालों पर ज़ियादा असर अनदाज़ होता है, जिस्मे इन्सानी में दस से बारह दिन तक अपना असर ज़ाहिर नहीं होने देता, और

उसकी अ़लामतें यह हैं कि तेज़ बुख़ार, बदन में दर्द, खुश्क खाँसी और साँस में दुश्वारी के अमराज़ पैदा हो जाते हैं। इन बातों के पेश नज़र हमें चाहिए कि कोई शख़्स ख़्वाह वह सेहतमन्द ही मालूम होता हो, उसकी खाँसी, जमाई, झींक और तनफ्फुस के दायरा से बाहर रहें, अपना माहौल तक़रीबन तीस दरजए हरारत तक गर्म रखें, बेहतर है कि गर्म मशरूबात, चाय या काफी और नीम गर्म पानी का इस्तेमाल करे, चीज़ों को बिलाज़रूरत न छुयें, और अगर छुयें तो साबुन वग़ैरह से धो कर ही हाथ को मुँह और नाक के करीब ले जाएं। बच्चों, बूढ़ों और पुराने बीमार चले आ रहे लोगों की ख़ुसूसी निगहदाश्त रखें, और ऐसी गिज़ा का इस्तेमाल करें जो कुव्वते मुदाफिअ़त ज़ियादा पैदा करती है।

ख़ासतौर पर अहले इस्लाम के लिए उनके दीन में पहले ही ऐसी तालीमात मौजूद हैं जिन के ज़रिये इस वबा को फैलने से रोकने में काफी हद तक कामयाबी मिल सकती है। कम से कम हर नमाज़ के लिए वुज़ू करें, वुज़ू में मज़मज़ा (कुल्ली करना) और इस्तिन्शाक़ (नाक में पानी डालना) में ज़ियादती (यानी मुंह और नाक के अंदरूनी हिस्से को अच्छी तरह साफ करने) का एहतिमाम करें, खाँसी और छींक के वक़्त आवाज़ पस्त रखने और चेहरा नीचे रखने की कोशिश करें, जमाई लेते वक़्त हाथ की पुश्त या और कोई साफ चीज़ मुँह पर रख लें, फराइज़ के अलावा बाक़ी सुनन व नवाफिल क़ियामगाह पर पढ़ें, और सबसे बढ़ कर यह कि अल्लाह तआला से डरते रहें, मौत के अपने वक़्त पर आने का यक़ीन रखें, और रब्बे ग़फ्फार से आफ़ियत माँगते रहें।

❖❖❖

प्रेम संदेशा

''सच्चा राही'' आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

पढ़ते हैं हम दुरूद

हर रोज़ हर नमाज़ में
पढ़ते हैं हम दुरूद
हर सुब्ह और शाम में
पढ़ते हैं हम दुरूद
एहसान याद करते हैं
अपने नबी के हम
शुक्रे रब करते हैं फिर
पढ़ते हैं हम दुरूद
जब भूलते हैं बात हम
करते हैं याद ख़ूब
आती नहीं है याद तो
पढ़ते हैं हम दुरूद
जब भी दुआ को हाथ
उठाते हैं दोस्तो
पहले दुआ से याद कर
पढ़ते हैं हम दुरूद
रहमत की भी दुआ हो
और उस में हो सलाम
ऐसा ही तो तलाश कर
पढ़ते हैं हम दुरूद
तुम भी पढ़ो दुरूद
और तुम भी पढ़ो सलाम
हम भी सलाम पढ़ते हैं
पढ़ते हैं हम दुरूद
रहमत नबी पे या रब
और उन पे हों सलाम
हुब्बे नबी में या रब
पढ़ते हैं हम दुरूद

दुन्या की तैयारी

—मौलाना नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इमाम ग़ज़ाली के ज्ञान का इस्लामी व गैर इस्लामी विद्वानों ने लोहा माना है। उनकी लिखित पुस्तक ''अहयाउल उलूम'' ज्ञान का एक ऐसा ठाठें मारता समुद्र है जिसकी छीटें भी किसी पर पड़ीं तो वह अपने समय का ज्ञानपुरुष कहलाया।

एक बार वह अपने मित्र से मिलने गए। घर की दहलीज़ पर कदम रखा था कि घर में से दोस्त के डाँटने—फटकारने की आवाज़ें आने लगीं, न जाने किस बात की नाराज़गी थी कि लगातार बरसे जा रहा था। कभी पत्नी को डाँट रहा है तो कभी बच्चों को। फलाँ चीज़ कहां है! मेरा जूता कहां है? इत्र कहां है, कपड़ा मैला क्यों है? मेरी तलवार में ज़ंग कैसे? ऐसा लग रहा था कि वह घबराहट में भागा—भागा फिर रहा था। अपनी तैयारी के चक्कर में पूरे घर को आसमान पर उठा रखा था। पता चला कि वह किसी बादशाह के दरबार से जुड़ा था और उसी में शामिल होने जा रहा था।

दुन्या भी बड़ी अजीब है और उसमें रहने वाले तो और भी अजीब हैं। ज़रा सी तड़क—भड़क क्या देखी उसके जादू के गुलाम हो गये। अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मेरी उम्मत (विशेष समुदाय) संसार को महत्व देने और उच्च समझने लगेगी तो इस्लाम की महानता और प्रतिष्ठा उनके दिलों से निकल जायेगी।

(तिर्मिज़ी)

बिल्कुल आज ऐसा ही हो रहा है। लोगों की आखें दुन्या की चकाचौंध से चुंधिया रही हैं। मुसलमानों की भी एक बड़ी संख्या इस सैलाब में बहती जा रही है। हालांकि मुसलमानों को धार्मिक दृष्टिकोण से दुन्या के प्रति प्रेम पर चेताया और डराया गया है, लेकिन इन सब के बावजूद मुसलमान फना होने वाली चीज़ों के पीछे पड़े हैं और उसे प्रतिष्ठा प्रदान कर रहे हैं।

ये दरबार वरबार की महब्बत भी बड़ी अजीब होती है, कुछ तो दरबार में हाजिर होने के लिए बेताब रहते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो दरबार और सरकार का जिक्र सुनना भी पसन्द नहीं करते। इतिहास की पुस्तकें पढ़िये तो उनकी दुन्या और दरबार से लालसा रहित (बेनियाज़ी) के किस्से भरे पड़े हैं।

खैर! बात इमाम ग़ज़ाली के दोस्त की हो रही थी। इमाम गज़ाली दोस्त के पास पहुंचे तो वह बदस्तूर चिल्लाए जा रहा था। इमाम साहब ने पूछा, खैरियत तो है, ये इतना चिल्लाना और झुझलाना क्यों? दोस्त ने कहा, अरे यार! मैं कब से पहनने के लिए खूब बढ़िया कपड़ा ढूँढ रहा हूँ कि लोग देखते रह जाएं और चमकदार तलवार तलाश कर रहा हूँ कि लोगों की आँखें चौड़ी हो जाएं।

इमाम ग़ज़ाली ने उससे बड़ी सहजता से पूछा कि ऐसा क्यों? दोस्त ने

कहा, बादशाह ने बुलाया है!

इमाम साहब दोस्त का जवाब सुन कर सोचने लगे कि एक बादशाह के दरबार में जाने के लिए इतनी तैयारी और इतना तामझाम! ऐ मेरे दोस्त हम सबकी तरह अल्लाह तुम्हें बहुत जल्द अपने यहां बुलाने वाला है, उसकी क्या तैयारी और क्या एहतेमाम है?

ये तो चिन्तन मनन का विषय है कि किसी बादशाह के दरबार में जाने की हम तो बड़ी तैयारी करते हैं मगर सारे जहाँ के बादशाह (अल्लाह) के यहां जाने की हमारी कौन सी तैयारी है? सच्ची बात तो ये है कि दुन्या में हर कोई अपने दिल को फुसलाए हुए है कि उसे अभी नहीं मरना है और सारे जहां के रब के सामने पेश नहीं होना। हालांकि वह रोज़ ही अपनी खुली आँखों से देखता और उसमें शरीक होता है। मगर फिर भी अपने को बहलाये और फुसलाए रखना कहाँ की होशियारी है?।

❖❖❖

इस्लाम के तीन बुन्यादी..... वह अपने साथियों के साथ लौट कर गया और कहा कि मेरा सलाम कुबूल करो, मैं चलता हूँ फिर तलवार का नियाम तोड़ा और ज़मीन पर फेंक दिया और तलवार ले कर दुश्मनों में घुस गया और खुदा की राह में जान दे दी।

एक बार अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने कहाः—

अनुवाद— *''उठो चलो उस जन्नत की तरफ जिसकी चौड़ाई में तमाम ज़मीन और आसमान हैं।''*

उमैर पुत्र हुमाम अंसारी रज़ि0 ने कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन है या जिसकी चौड़ाई में ज़मीन व आसमान आ जायेंगे?'' आपने फरमाया, ''हाँ''! उन्होंने कहा, ''ओ हो''। अल्लाह के रसूल ने फरमाया, ''यह क्यों कहते हो''? उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! सिर्फ इस उम्मीद में कहता हूँ कि शायद मैं भी उन जन्नत के लोगों में से हूँ। आपने फरमाया, ''तुम उनमें हो''! वह अपनी थैली में से खजूर निकालने और खाने लगे। फिर कहा कि अगर मैं इन खजूरों के खाने तक ज़िन्दा रहूँ तो यह तो बड़ी लम्बी ज़िन्दगी है। फिर उन्होंने खजूरें फ़ेंक दीं, और लड़ना शुरु किया, यहाँ तक कि शहीद हो गये।

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि अनस पुत्र नज़र रज़ि0 ने उहद युद्ध में हज़रत साद पुत्र मआज़ रज़ि0 को देखा तो कहा कि 'नज़र के खुदा की कसम मुझे जन्नत की खुशबू उहद के पहाड़ों के उस ओर से आ रही है। जब वह शहीद हुए तो उनके जिस्म पर कुछ ऊपर सत्तर जख़्म (घाव) थे। तलवार के, बर्छे के और तीर के जख़्मों से छलनी हो जाने की वजह से उनको पहचाना भी नहीं जा सकता था मगर उनकी बहन ने उनकी सिर्फ एक उंगली की वजह से पहचान लिया जिस पर बचपन की खास निशानी थी।

जारी.....

❖❖❖

हलाल कमाई का महत्व और उसकी बरकत

—मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं में एक क़ीमती और बहुमूल्य दुआ यह भी है। ''ऐ अल्लाह हलाल रोज़ी दे कर हराम रोज़ी से बचा, अपने अलावा किसी दूसरे का मुहताज न बना, दूसरी जगह रिज़्कतय्यिब पवित्र जीविका की दुआ फ़रमाई, इनसान के नेक और सुवालेह सदाचारी बनने में पाक कमाई का बड़ा दख़ल है। इस वक़्त आपके सामने ख़ुदा रसीदा और दरवेश सिफ़त अल्लाह से डरने वाले सदाचारी बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर रह0 का एक क़िस्सा पेश किया जाता है, औरंगज़ेब आलमगीर के पास एक ज़रूरतमंन्द आया कहने लगा ''ऐ शहनशाहे आलमगीर! मैं बहुत ग़रीब आदमी हूँ मुझे अपनी दो जवाँ साल बेटियों की शादी करनी है, आप मेरी मदद फ़रमायें, शहनशाहे हिन्द ने जवाब दिया ''अच्छा तुम कल आना, हमसे जो हो सकेगा, तुम्हारी मदद करेंगे'' ज़रूरतमन्द चला गया, उसी रात शहनशाह औरंगज़ेब ने भेस बदला और निकल खड़े हुए, रास्ते में देखा कि एक मुसाफ़िर सामान लिये खड़ा है, और उसे किसी मज़दूर की तलाश है, बादशाह उस समय मज़दूर के भेस में थे, उन्होंने आगे बढ़ कर मुसाफ़िर का सामान अपने सर और पीठ पर लाद लिया और जहाँ मुसाफ़िर ने कहा, पहुँचा दिया। मज़दूरी दो पैसे मिली, औरंगज़ेब आलमगीर महल आये और बड़े इतमीनान से सो गये। सुब्ह हुई ज़रूरतमन्द ग़रीब आदमी पहुँच गया। बादशाह ने कहा ''यह दो पैसे मेरी मेहनत की मकाई है, यह ले जाओ, अल्लाह तुम्हारा मददगार हो,''। वह ग़रीब ज़रूरतमन्द तो बडा हैरान और परेशान हुआ, दो पैसे, इन दो पैसों से दो बेटियों की शादी कैसे करूँगा, वह पैसे लिये और मायूस हो कर चला गया।

अब सुनो, फिर क्या हुआ, वह ग़रीब आदमी अपने इलाक़े में जा रहा था, रास्ते में देखा, अनार बिक रहे हैं, उसने दो पैसे के अनार ले लिये उसके अपने इलाक़े में अनार नहीं होते थे, अब वह सफ़र करते करते अपने इलाक़े में पहुँच गया। उसी इलाक़े में एक रईस रहता था उसकी बेटी बीमार थी, सारे इलाज नाकाम हो गये थे, आखिर एक हकीम साब ने कहा, इस बीमार लड़की को अब अनार के रस की ज़रूरत है, उससे आराम हो जायेगा, रईस ने इलाक़े में डुग्गी पिटवा दी, जो अनार जल्द ला कर देगा उसे इनआम दिया जायेगा, यह बात उस

ग़रीब आदमी तक पहुँची जिसने शहनशाहे औरंगज़ेब आलमगीर की हलाल कमाई के दो पैसे के अनार ख़रीदे थे। वह अनार फ़ौरन हाथ में हिफ़ाज़त से ले कर रईस के घर पहुंचा और अनार पेश कर दिये हकीम साहब ने रस निकाला और रईस की बेटी को पिला दिया, अल्लाह की शान, अनार का रस उसके लिये अचूक दवा साबित हुई और वह अच्छी हो गई। रईस ने अनार लाने वाले से कहा ''बोलो क्या माँगते हो? ग़रीब आदमी ने अपनी दो बेटियों की शादी का ज़िक्र किया रईस ने दोनों की शादी करा दी और अनार वाले को बहुत सी रक़म इनआम में दी, वह तो मालामाल हो गया।

अल्लाह ने इन दो पैसों में कितनी बरकत दी। याद रखना, यह बरकत हलाल कमाई के दो पैसों की है, इनसान को सब्र और तक़वा अल्लाह से डरने वाली ज़िन्दगी गुजारना चाहिए, अल्लाह का वादा है जो उससे डरता है और उसका आज्ञापालन करता है, अल्लाह उसको ऐसे रास्ते से रिज़्क़ जीविका देता है जिसका उसे गुमान भी नहीं होता है। हदीस शरीफ़ में आता है कि इन्सान परेशानी की हालत में रो रो कर और गिड़गिड़ा कर अल्लाह तआला से दुआ करता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है, तेरा खाना हराम, तेरा लिबास हराम ऐसी सूरत में दुआएं कैसे कुबूल हो सकती हैं।

❖❖❖

पयारे नबी की .....

हर जगह नाज़िल होगा सिवाय मक्का मदीना के, और मक्का मदीना के हर दरवाज़े पर कई कई फरिश्ते रखवाली के लिए मुकर्रर होंगे, फिर वह मदीना के करीब शोर ज़मीन (अर्थात बंज़र ज़मीन) पर उतरेगा और मदीने में तीन बार ऐसा सख्त ज़लज़ला आयेगा कि सब काफिर और मुनाफिक निकल पड़ेंगे। (मुस्लिम)

दज्जाल के साथीः–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि असफहान के सत्तर हज़ार यहूदी तैलसानी लिबास वाले दज्जाल के साथ होंगे। (मुस्लिम)

दज्जाल के डर से लोगों का भागनाः–

हज़रत उम्मे शरीक रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि लोग दज्जाल के खौफ से भागते फिरेंगे और पहाड़ों में जा जा कर पनाह लेंगे। (मुस्लिम)

दज्जाल का फित्ना सबसे बड़ा फित्ना हैः–

हज़रत इमरान बिन अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि आदम अलै0 की पैदाइश से ले कर कयामत के कायम होने तक कोई फित्ना दज्जाल के फित्ने से बड़ा नहीं। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

तुलसी (रैहान)

—फौज़िया सिद्दीक़ा बी0ए0

तुलसी एक बहुत लाभ दायक पौधा है इस को अरबी में रैहान कहते हैं इस का बड़ा लाभ यह है कि इस के पास मच्छर नहीं आते आज कल मच्छरों से दुन्या परेशान है मच्छर भगाने के जितने उपाय हैं सब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं अतः चाहिए कि लोग गमलों में तुलसी लगायें और रात में सोते वक़्त गमला अपने पास रखें मच्छरों से बहुत कुछ बचत रहेगी।

तुलसी का पौधा लग भग आधा मीटर ऊँचा होता है इसकी पत्तियाँ बड़ी ही उपयोगी हैं।

तुलसी के पत्ते और अरूसा के पत्ते छःछः ग्राम ले कर पीस छान कर पिलाने से खाँसी तथा दमा में लाभ होता है। तुलसी के पत्तों को उबाल कर पिलाने से पसीना आता है और बुख़ार उतर जाता है यदि कान में दर्द हो तो तुलसी के पत्तों का रस टपकाने से कान का दर्द दूर हो जाता है। यदि नाक से बदबू आती हो तो तुलसी के पत्तों का रस नाक में टपकान से बदबू दूर हो जाती है तुलसी का रस और लेमू का रस बराबर मिलाएं और दाद पर लगाये प्रति दिन सात दिनों तक लगाने से दाद ख़त्म हो जाता है, यह घोल खुजली में भी लगाने से खुजली ठीक हो जाती है मैं किताबों में पढ़ कर और अपने अनुभव के आधार पर लिखती हूँ कि जो व्यक्ति प्रति दिन सुब्ह को सूर्योदय के पश्चात बर्गेरैहान (तुलसी के पत्ते) तीन चार अदद चबा कर खाएं इसी प्रकार शाम को सूर्योस्त से पहले खाएं और यह प्रक्रिया जारी रखें तो नज़ला, ज़ुकाम, खाँसी, वायरल फीवर से सुरक्षित रहेंगे। और मेरा अनुमान है कि कोरोना से भी बचा रहेगा। जबकि दूसरी एहतियातें जारी रखे गा लेकिन रैहान के पेड़ बहुत कम दिखाई देते हैं हम को चाहिए कि घर के गमलों में लान में पार्कों में वाटिकाओं में तुलसी के पेड़ खूब लगाएं और उनसे लाभ उठाऐं। मैं ने जो कुछ लिखा है वह भारतीय रैहान (तुलसी) के विषय में लिखा है वैसे युनानी अदविया में लिखा है कि माहिरीन ने रैहान के साठ प्रकार बताएं हैं जो अमरीका योरोप आदि में पाये जाते हैं उन बाहर के रैहानों के विषय में मेरी कोई जानकारी नहीं है। ◆◇◆

दोहरा इनाम

—राशिदा नूरी

समुद्र के निकट एक गाँव में एक निर्धन मछुवारा रहता था वह प्रतिदिन समुद्र जाता और वह मछलियाँ पकड़ कर लाता और मछलियां बेच कर अपनी रोटी चलाता उसके पास एक छोटी सी लकड़ी की नौका थी जो समुद्र के किनारे पड़ी रहती थी वह उसी नौका पर चढ़ कर मछलियाँ पकड़ता था।

समुद्र के किनारे कभी—कभी मदरसे के बच्चे टहलने आ जाते और कभी—कभी वह परस्पर इल्मी मुज़ाकिरा करने लगते एक दिन दो तालिबे इल्म आपस में बात कर रहे थे एक ने दूसरे से पूछा मुख़न्नस किसे कहते हैं दूसरे ने जवाब दिया मुख़न्न्स वह है जो न मर्द हो न औरत शरीअ़त में उसके अहकाम हैं औरतें उससे पर्दा करेंगी, नमाज़ में व सबसे पीछे खड़ा होगा ये सुन कर मछुआरा चौंक पड़ा उसने तालिबे इल्म से पूछा भय्या बताओ क्या कोई ऐसा भी होता है जो न मर्द हो न औरत तालिबे इल्म ने जवाब दिया हाँ चचा मियाँ अल्लाह की मख़लूक़ में ऐसे लोग भी होते हैं हम उनको मुख़न्नस कहते हैं मछुआरे ने कहा तो फिर उसका शादी विवाह भी न होता होगा न उसके सन्तान होती होगी तालिबे इल्म ने कहा हाँ चचा मियाँ उसका न विवाह होता है न उसके सन्तान होती है मछुआरा ने पहली बार ये जाना था उसके मन में मुख़न्नस का शब्द अच्छी तरह बैठ गया।

मछुआरा प्रतिदिन अपना काम करता रहा मछलियां पकड़ता और बेचता रहा एक दिन उसके जाल में एक आश्चर्यजनक मछली आ गयी ये मछली बड़ी सुन्दर थी गहरे लाल रंग की थी यद्यपि वह पचास ग्राम वज़न से अधिक न थी मछुआरा वह मछली घर लाया दूसरी मछलियाँ जो पकड़ी थीं उनको देखा परन्तु इस सुन्दर मछली को शीशे के जार में पानी भर कर रख लिया, जिस वक़्त मछली तैरती थी तो बड़ा अच्छा लगता था मछुआरे ने सोचा कि यह मछली बादशाह सलामत की ख़िदमत में पेश करूँ तो शायद कुछ इनाम मिले जिससे मेरी ग़रीबी दूर हो इस इरादे से वह मछली का जार ले कर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए चल पड़ा और कई दिन के बाद बादशाह की ख़िदमत में पहुंच गया बादशाह का एलान था कि मेरी रिआया मे से कोई मुझ से मिलना चाहे तो उसे रोका न जाए इस तरह आसानी से मछुआरा बादशाह के दरबार में हाज़िर हो गया बादशाह को सलाम किया और अर्ज़ किया कि हुजूर ये खूबसूरत मछली मैंने समन्दर से निकाली है आपको नज़्र करने के लिए लाया हूँ बादशाह ने मछली को देखा और बहुत पसन्द किया दरबारियों को हुक्म दिया ये मछली पाल ली जाय और मछुआरे को सौ अशरफियाँ इनाम में दी जाएं बाज़ दरबारियों को

शेष पृष्ठ ....40....पर

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

अच्छी बीवी का मानक शरीयत की नज़र में:–

नबी–ए–अकरम सल्ल0 ने सिर्फ़ निकाह करने पर ही प्रेरित नहीं किया बल्कि इस बारे में विस्तृत निर्देश देकर हर हर मोड़ पर मार्गदर्शन किया है, निकाह के बारे में सबसे पहले यह सवाल सामने आता है कि बीवी को चुनते समय मानक क्या हो? प्राकृतिक नबी सल्ल0 और मुकम्मल धर्म इस्लाम ने इसबारे में भी अपने मानने वालों को अँधेरे में नहीं छोड़ा, बल्कि वह मानक सामने रखा जिससे निकाह के फायदे और मक़सद हासिल करने में मदद मिले, और मियां बीवी की ज़िन्दगी बेहतर से बेहतर बन जाए, वे एक दूसरे के सच्चे दोस्त और साथी बनें, इन मक़सदों का हासिल होना ना होना ज़ियादातर बल्कि पूरे तौर से औरत के मिज़ाज और उसकी खूबियों पर निर्भर करता है, अगर वह उन खूबियों और गुणों से सुसज्जित है जो अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है तो दोनों की ज़िन्दगी सुहानी और उन की दुन्या भी जन्नत का नमूना बन जाती है, इसलिए कि हदीसों में अच्छी औरत को दुन्या की बेहतरीन नेमत (वरदान) क़रार दिया गया है।

पूरी दुन्या बस वक़्ती फ़ायदा पहुँचाने वाली चीज़ है, और दुन्या की फ़ायदा पहुँचाने वाली चीज़ों में नेक और अच्छी औरत से ज़ियादा बेहतर कोई चीज़ नहीं।

एक और अवसर पर अच्छी औरत के गुण ज़रा विस्तार से बयां करते हुए रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उसको सबसे ज़ियादा फ़ायदा पहुँचाने वाली नेमत फ़रमाया :—

मोमिन को तक़वे के बाद सबसे ज़ियादा अच्छी बीवी से फ़ायदा पहुँचता है (और अच्छी बीवी के गुण यह हैं) जो पति के हुक्म पर फ़ौरन अमल करती, उसकी तरफ़ देखने से पति को ख़ुशी हासिल होती, उस पर भरोसा कर के क़सम खा ले तो वह उसे पूरा कर देती, पति की ग़ैरहाज़िरी में उसके माल को बर्बाद नहीं करती और अपनी ओर से भी उसे किसी तरह का दुःख ना पहुँचाती हो।

आमतौर पर इंसान अपनी अदूरदर्शिता और भावनाओं से हार कर सीरत के मुक़ाबले सूरत को तरजीह देता है और ऐसी औरत से शादी करने का ज़ियादा इच्छुक नज़र आता है जिस की शक्लो सूरत ज़ियादा अच्छी हो जबकि यह बहुत जल्द बदल बल्कि ख़त्म हो जाने वाली ख़ूबी है, और ख़त्म नाहो तब भी इसका फ़ायदा बहुत सिमित और वक़्ती होता है, इसलिए समझदारी और दूरदर्शिता यह नहीं है कि बस शक्लो सूरत पर ऐसी नज़र हो कि बाक़ी दूसरे गुणों का महत्व ना रह जाए, हुज़ूर सल्ल0 ने इस बारे में भी किस क़द्र प्रभावी अंदाज़ में मार्गदर्शन दिया है।

''औरत से शादी करने की इच्छा (आमतौर से) चार चीज़ों की वजह से होती है दौलत, ख़ानदान, खूबसूरती

(और दीनदारी) तुम दीनदार औरत से शादी करने में कामयाब हो जाओ यानी दीनदार औरत से शादी करो यही बड़ी कामयाबी है।''

ऊपर वाली हदीस से मालूम हुवा कि सबसे ज़ियादा तरजीह जिस गुण को दिया जाना चाहिए वह दीनदारी है, जिस शख़्स को दीनदार बीवी मिल जाए वह बड़ा खुशनसीब और उसकी ज़िन्दगी कामयाब है, क्योंकि असली दीनदारी औरत को तमाम कर्तव्य पूरा करने, बुराइयों से बचने ख़ैरख़्वाही पर उभारेगी जिसका नतीजा यह होगा कि पति की बात मानना, अपनी इज़्ज़त की हिफाज़त, माल दौलत की निगरानी, कम खर्चीलेपन, औलाद की परवरिश और पति की ख़ैरख़्वाही वग़ैरह तमाम काम, अच्छे ढंग से पूरा करेगी, सारांश यह कि वह तमाम खूबियां उसमें पाई जाएँगी जो एक बेहतरीन जीवन साथी में होनी चाहिए, इन्हीं खूबियों की वजह से (अरबों में) कुरैश की नेक औरतों को हुज़ूर सल्ल0 ने बेहतरीन औरतें क़रार दिया है।

अरबों में सबसे बेहतर कुरैश की नेक औरतें हैं कि वे बच्चों पर बहुत ही मेहरबान (उनकी परवरिश करने में बहुत तत्पर) और पति के माल और निजी संपत्ति की बहुत देखभाल करती हैं।''

अवसर पर उपदेश और नसीहत के अंदाज़ में, औरतों को अच्छे गुण अपनाने की इस तरह अहमियत जताई।

''औरत जबकि पाँचों वक़्त नमाज़ पढ़ती हो, पूरे रमज़ान के रोज़े रखती हो, गुप्तांग की हिफाज़त और पति की बात मानती हो तो वह जन्नत के दरवाज़ों में से जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए।''

एक बार हुज़ूर सल्ल0 से मालूम किया गया कि बेहतरीन बीवी कौन सी होती है? आप सल्ल0 ने फरमायाः

''जिसे देख कर पति को ख़ुशी हो, पति के हर हुक्म को पूरा करे और कोई ऐसा काम न करे जो पति को नापसंद हो।''

जिस तरह बीवी को चुनते समय उसकी दीनदारी को देखना अच्छा क़रार दिया गया है इसी तरह पति के अंदर भी यही गुण देखना चाहिए, क्योंकि दीनदारी और ख़ुदा का ख़ौफ उसको बीवी के हक़ अदा करने पर जिस हद तक तैयार कर सकता है दूसरी कोई चीज़ नहीं कर सकती, औरत को शादी के बाद असल शिकायत पति से यही होती है कि वह ज़ुल्म करता है और उसके हक़ पूरी तरह अदा नहीं करता, इसलिए जिसका पति तमाम हक़ अदा करता हो वह खुशनसीब और उसकी जिन्दगी कामयाब और बहुत ही अच्छी करार दी जाति है और ऐसा व्यक्ति बेतरीन पति कहा जाता है।

हसन बस्री (रह०) की समझदारी भरी सलाहः-

इस अवसर पर महान ताबेई हज़रत हसन बस्री (रह०) की एक बहुत ही समझदारी वाली सलाह लिखना मुनासिब है, बल्कि ज़रूरी मालूम हो रहा है, जिसे मुल्ला अली क़ारी (रह०) ने अपनी किताब ''मिरक़ातुल मफ़ातीह'' में लिखा है। हज़रत हसन बस्री (रह०) के पास एक व्यक्ति ने आ कर कहाः

''हज़रत मेरी एक लड़की के लिए विभिन्न लोगों के पास से पैग़ाम आरहे हैं, आपसे सलाह लेना चाहता हूँ कि किस व्यक्ति से उसकी शादी करूँ, हज़रत हसन बस्री ने फ़रमाया बस ऐसे व्यक्ति से शादी करना जो

अल्लाह से डरता हो, फिर यह हिकमत बयां फरमाईः–

"क्योंकि अगर वह उसे पसंद करेगा तबतो क़द्र करेगा ही अगर नापसंद भी करेगा तो जुल्म नहीं करेगा। असल मसला नापसंद होने या मिजाज के न मिलने के समय पैदा होता है और इसकी संभावना हर हाल में रहती है कि किसी समय भी ऐसे हालात पैदा हो सकते हैं, दीनदार पति ऐसी हालत में भी दिल नहीं दुखायेगा और जुल्म नहीं ढायेगा, इसके उल्टा अगर उसमें खुदा का खौफ नहीं है तो उसे जुल्म करने और सताने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती।

सिर्फ़ माल व हैसियत और ख़ूबसूरती की वजह से शादी करना नापसंदीदाः–

नबी–ए–अकरम (स०) ने दीनदारी को प्राथमिकता वाला गुण बताने के साथ कुछ दूसरी चीज़ों की बुराईयां भी बयां की हैं, जैसे फरमाया :–

"सिर्फ़ ख़ूबसूरती की वजह से किसी औरत से शादी न करना, क्योंकि हो सकता है ख़ूबसूरती उसके लिये तबाही और बिगाड़ का जरिया बन जाए, माल व दौलत की वजह से न करना क्यों की माल से आमतौर पर विद्रोह आ जाता है (क्यों मालदार बीवी गरीब पति की बात मानने के बजाए अक्सर उसे अपना नौकर समझने लग जाती है) बस दीनदारी के आधार पर शादी करो।"

(इब्ने माजह पृष्ठः153)

जारी.....

❖❖❖

दोहरा इनाम.....

अच्छा न लगा उन्होंने आपस में मशवरह किया कि बादशाह सलामत से कहा जाय कि मछुआरे से पूछें कि ये मछली नर है या मादा अगर नर है तो इसकी मादा लाने का हुक्म दें और अगर मादा है तो इसका नर लाने का हुक्म दें ताकि इस मछली की नस्ल चल सके मछुआरे को दरबारियों की इस साज़िश की भनक लग गई उसने सोचा कि मेरे पास इसका जवाब है चुनांचे एक दरबारी ने बादशाह से यह बात अर्ज़ कर दी बादशाह समझ गया कि ये लोग ग़रीब मछुआरे के इनाम में रुकावट डालना चाहते हैं फिर भी बादशाह ने मछुआरे को बुलाया और हुक्म दिया कि ये मछली नर या मादा? मछुआरे ने अर्ज किया हुजूर ये मछली न नर है न मादा बल्कि मुख़न्नस है बादशाह इस जवाब से हंस पड़ा और हुक्म दिया कि मछुआरे को दोहरा इनाम दिया जाय सौ अशरफियाँ इसके लाने पर और सौ अशरफियाँ इसके बरजस्ता जवाब पर चुनांचे ख़जान्ची ने सौ सौ अशरफियों की दो थैलियाँ ला कर मछुआरे को पेश कर दीं मछुआरे ने बादशाह को सलाम किया और दरबारियों का शुक्रिया अदा किया और अशरफियाँ ले कर अपने घर वापस आ गया अब ये मछुआरा निर्धन न था अपितु धनवान था और मछलियाँ पकड़ने का काम छोड़ दिया और मछलियाँ खरीदने बेचने का कारोबार शुरु किया मदद के लिए कुछ नौकर भी रखे बहुत जल्द उसका कारोबार तरक़्क़ी कर गया जिस तरह अल्लाह ने उस मछुआरे की ग़रीबी दूर की उसी तरह हर ग़रीब की ग़रीबी दूर करे मगर बादशाह के इनाम से नही बल्कि खुद उसकी मेहनत की बरकत से।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 तारीख _____

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखी उर्दू पढ़िये, जहां कठिनाई आए बाद में लिखी हिन्दी से मदद लीजिए

حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلّم اللہ کے رسول ہیں، وہ اللہ کے آخری نبی ہیں، ان کی نبوت ساری دنیا کے انسانوں کے لئے اور رہتی دنیا تک کے لئے ہے۔ ہاں وہ ہم میں نہیں ہیں لیکن ان کے بعد ان کے خلفاءؓ اور دوسرے صحابہؓ نے ان کی تعلیمات دنیا کو پہنچائی اور اب امت کے علماء اور ان کی امت اور صلحاء ان کی تعلیمات دنیا کو پہنچا رہے ہیں اور پہنچاتے رہیں گے۔ اللہ تعالیٰ میرے نبیؐ پر لاکھوں رحمتیں اور کروڑوں سلام اتارے، ان کی آل ان کی ازواج اور ان کے اصحاب پر بھی سلام ہو۔

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, वह अल्लाह के आखरी नबी हैं, उन की नुबूव्वत सारी दुन्या के इन्सानों के लिए और रहती दुन्या तक के लिए है, हाँ वह हम में नहीं हैं लेकिन उनके बाद उनके ख़ुलफा रज़ि0 और दूसरे सहाबा रज़ि0 ने उनकी तालीमात दुन्या को पहुंचाई और अब उम्मत के उलमा और उनकी उम्मत और सुलहा उनकी तालीमात दुन्या को पहुँचा रहे हैं और पहुँचाते रहेंगे, अल्लाह तआ़ला मेरे नबी पर लाखों रहमतें और करोड़ों सलाम उतारे, उनकी आल उनकी अज़वाज और उनके अस्हाब पर भी सलाम हो।